

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

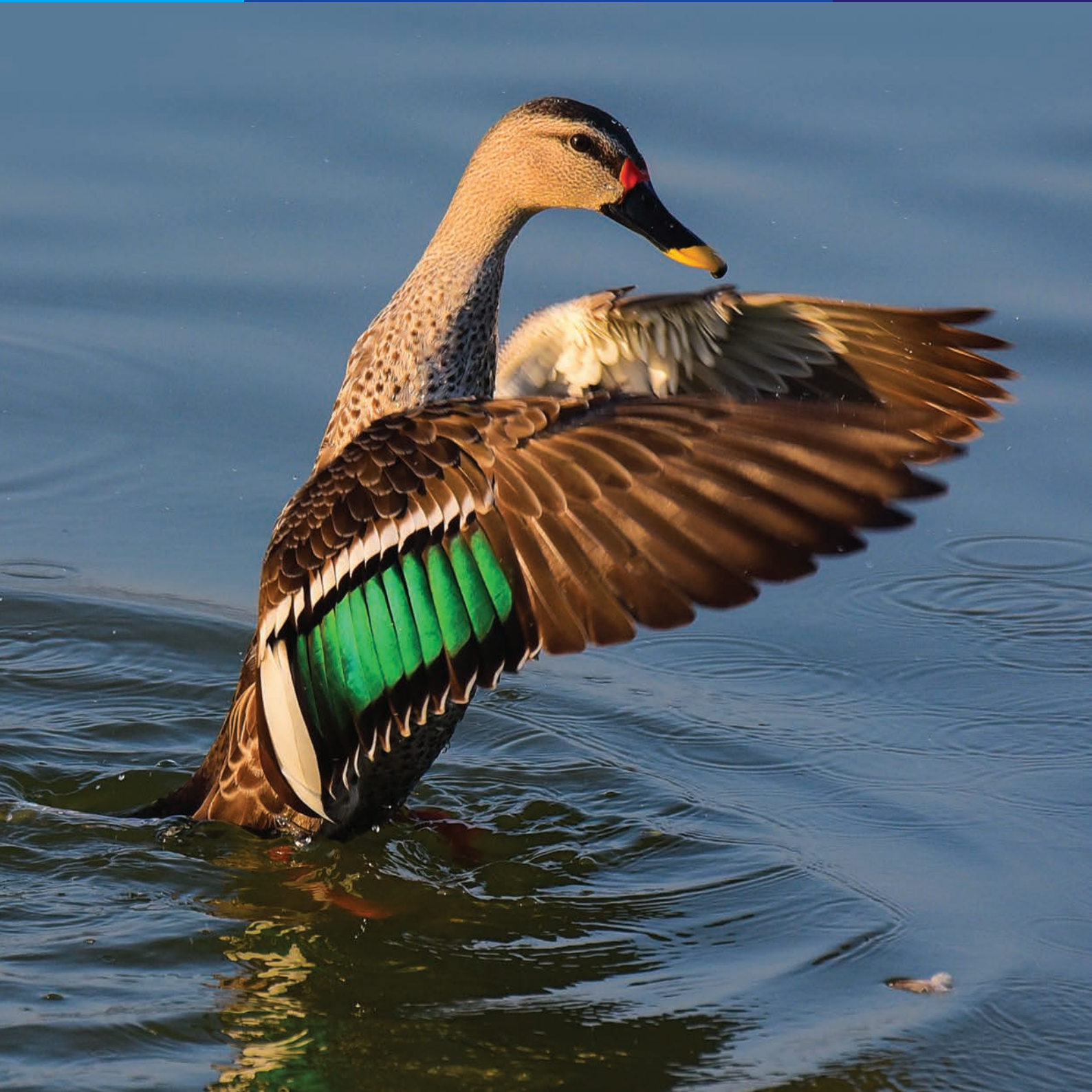
गगन

इसरो
ISRO

क्रमांक 53

विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र की गृह पत्रिका

अप्रैल - सितंबर 2021



हिंदी भाषी



1

करुणा पांडे
ड्राफ्ट्समैन-सीII, एचटीडीजी
कंबल

गगन में प्रकाशित लेखों के लिए पुरस्कार
गगन के अक्टूबर, 2020 – मार्च, 2021 अंक में
प्रकाशित रचनाओं के लेखकों को निम्नानुसार
नकद-पुरस्कार प्रदान किए गए



2

स्नेहा वर्मा
श्री विजेन्द्र कुमार जी की पत्नी
क्यूं है?



3

विपिन कुमार यादव
वैज्ञा./इंजीनियर-एसएफ
ट्रिस्टन डा कुन्हा:
पृथ्वी का एक अनूठा स्थान

हिंदीतर भाषी



1

सी कमलाम्मा
श्रीमती मालिनी जी की माँ
अज्ञेय के काव्य में व्यष्टि
और समष्टि

2



लक्ष्मी जी
वरि. हिंदी अनुवादक
शब्दार्थ-चिंतन



2

राजेश एन
वैज्ञा/इंजी-एसडी
बिना विश्व कप के...

3



सुश्री संगीता दास
वैज्ञा/इंजी-एसडी, पीएफसी
मेरी माँ



3

नवनीत संतोष कृष्णन
डॉ. संतोष जी का सुपुत्र
यह सुंदर प्रकृति

पुरस्कार प्राप्त सभी रचनाकारों को
हार्दिक बधाइयां !!!



संरक्षक

श्री एस सोमनाथ

मुख्य संपादक

डॉ. पंकज प्रियदर्शी

संपादक मंडल

श्री प्रमोद कुमार पांडे

डॉ. शशिभूषण तिवारी

डॉ. तरुण कुमार पंत

श्री उल्लेख पांडे

श्रीमती लक्ष्मी प्रीति मणि

श्रीमती पायल अग्रवाल

श्री आसिर नेसा दास

श्री राकेश रंजन

श्रीमती आर महेश्वरी अम्मा

श्री एम जी सोम शेखरन नायर

संपादन सहयोग

श्रीमती लक्ष्मी जी

श्रीमती राधम्माल देवराज

श्रीमती सी वी विनीता

श्रीमती चंदना राजेश

श्रीमती आतिरा एम जी

श्री कृष्ण मुरारी

प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार

लेखकों/रचनाकारों के अपने हैं।

यह आवश्यक नहीं कि उनसे

संपादक मंडल की सहमति हो।

विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र

तिरुवनंतपुरम-695022

दूरभाष : 2564021, 4189, 4120

फैक्स : 0471 2564022

संपादकीय

अंक 53 के प्रकाशन के अवसर पर **गगन** के पाठक व उसमें अपनी रचनाएं देनेवालों के लिए एक हर्षवर्धक समाचार है। **गगन** को **ग** क्षेत्र की गृह पत्रिकाओं में वर्ष 2020-21 के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कारों की श्रेणी में **द्वितीय पुरस्कार** से सम्मानित किया गया है। विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र के निदेशक श्री एस सोमनाथ जी ने यह पुरस्कार 14 सितंबर 2021 को ग्रहण किया। यह सब विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र के सभी सदस्यों के भरपूर योगदान के कारण संभव हो पाया है। इसका श्रेय हिंदी भाषी व हिंदीतर भाषी रचनाकारों को, हिंदी अनुभाग को, और गगन के संपादक मंडल व उसके मुख्य संपादक, श्री अभय कुमार जी को जाता है। श्री अभय कुमार जी जुलाई 2021 में 35 वर्ष की विशिष्ट सेवा के उपरांत सेवा-निवृत्त हुए हैं। उन्होंने गगन पत्रिका के मुख्य संपादक का कार्यभार 10 वर्ष तक संभाला।

पिछले अंक के विजेताओं को बहुत-बहुत बधाइयां। इस अंक में भी बहुत से रोचक लेख और कविताएं आदि शामिल किए हैं। वर्तमान अंक में भारत के प्रथम मानव मिशन - गगनयान के एक महत्वपूर्ण अंग, क्रू एस्केप सिस्टम (सी ई एस) के कम लागत से व जल्द परीक्षण करने हेतु परीक्षण वाहन परियोजना के तहत तैयार किए जा रहे एक राकेट के बारे में लेख है। इस अंक से अंतरिक्ष उद्योग की महत्वपूर्ण खबरों का संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत किया जाएगा। यह वीएसएससी के पुस्तकालय और हिंदी अनुभाग के संयुक्त प्रयास द्वारा संभव हो पाया है। कुछ लेख अभियांत्रिकी से प्रेरित हैं, तो बहुत से लेख व कविताओं के माध्यम से लेखक / कवियों ने सामाजिक विषयों को अपने अंदाज़ में और अपने नज़रिए से प्रस्तुत किया है। हर बार की तरह, इस बार भी सभी पाठकों की रुचि का ध्यान रखने की कोशिश की गई है। आशा है यह अंक भी आपको पसंद आएगा। अपनी राय और सुझाव हमें प्रेषित करें ताकि हम आगामी अंकों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन ला सकें।

पंकज प्रियदर्शी
पंकज प्रियदर्शी

मुखपृष्ठ चित्र सौजन्य : श्री सनोज एस, लेखा अधिकारी, एससीएल



इश अंक में

परीक्षण यान परियोजना...	5	टिप: एक अनोखी परंपरा	26
अंतरिक्ष गमन क्षमता...	7	बिहार के प्रसिद्ध मीठे व्यंजन	29
नासा के अगले चांद्र अभियान...	10	इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स...	31
पूर्व संपादक की बिदाई	11	भारतवर्ष	33
अय्याला सोमयाजूला ललिता...	12	अंतरिक्ष प्रश्नोत्तरी	33
माँ	13	हिंदी कार्यक्रम...	34
अभी पास... और अब यह दूरी	14	जीवन की कीमत	39
यह लाल रंग की बात है	15	मूल काम हिंदी में करने हेतु	
हरिद्वार	16	पुरस्कार योजना	40
आपराधिक कृत्य-“दोषी कौन”	18	भाषाओं का खेल	42
मौत का सौदागर कोरोना	19	शब्दों का खेल	43
अंत से अनंत	20	राजभाषा मंजरी	43
मानवता : आज और कल	21	चुटकुले	48
सरपास की कहानी...	21	आपकी प्रतिक्रिया हमारी प्रेरणा	49
राष्ट्रप्रेम	24	राजभाषा विभाग द्वारा प्रदत्त	
बारिश का मौसम	25	कीर्ति पुरस्कार	51

परीक्षण यान परियोजना

परिचय

कर्मिंदल बचाव प्रणाली (क्रू एस्केप सिस्टम-सीईएस) की कल्पना मानवोचित प्रमोचन यान(एचआरएलवी) की वायुमंडलीय उड़ान के दौरान किसी अप्रत्याशित आपातस्थिति के आने पर कर्मिंदल की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए की गई है। यद्यपि पीएटी-01 में प्रमोचन मंच विफलन स्थिति में सीईएस का मूल्यांकन किया गया था, उक्त का विभिन्न क्रांतिक उड़ान अवस्थाओं, जैसे आध्वनिक माख, अधिकतम गतिक दाब(क्यूमैक्स) व पराध्वनिक स्थितियों, में इसकी योग्यता की जांच की जानी है।

सीईएस विफलन प्रदर्शन के लिए विकसित 'परीक्षण यान' एक एकल चरण, द्रव नोदित वाहन है, जो मौजूदा एल-40 चरण आर्किटेक्चर का अधिकतम उपयोग करता है, जो कि समग्र विकास के लिए लगनेवाले समय व लागत को कम करता है तथा इसकी बेहतर विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है।

सभी नई प्रणालियों के साथ दो विकासात्मक उड़ानों (डी1 व डी2) के वाहन निष्पादन प्रदर्शन के लिए इसके 'फास्ट ट्रैक' विकास एवं योग्यता सिद्धि हेतु 25 फरवरी, 2019 को इस परियोजना के लिए अनुमोदन दिया गया।

संरूपण : परीक्षण यान संरूपण हासिल करने के लिए मौजूदा जीएसएलवी एल 40 में निम्नलिखित परिवर्तन किए गए हैं:

इंजन : दो अक्ष (प्लेन) गिंबालिंग से युक्त एआर 6 शंकु नोज़ल के साथ एचपी विकास इंजन एल 40 संरचना न्यूनतम संशोधन के साथ स्वीकृत की गई है।

नियंत्रण प्रणाली : नियंत्रण प्रणाली में इंजन गिंबल नियंत्रण (ईजीसी), फिन विक्षेपण नियंत्रण (एफडीसी) तथा एक अभिक्रिया (रिएक्शन) नियंत्रण प्रणाली (आरसीएस) शामिल हैं। ये प्रणालियां संक्षिप्त रूप में निम्नानुसार वर्णित हैं:

ईजीसी : प्रणोदन चरण के दौरान अक्षनमन व पार्श्ववर्तन के लिए विद्युत द्रवचालित प्रवर्तक (ईएचए) आधारित दो अक्ष (प्लेन) इंजन गिंबल नियंत्रण लगाई गई है।

एफडीसी : उत्पादन चरण के दौरान रोल नियंत्रण तथा गैर प्रणोदन चरण के दौरान अक्षनमन, पार्श्ववर्तन व रोल नियंत्रण के लिए ईएचए आधारित फिन विक्षेपण नियंत्रण प्रणाली।

आरसीएस : उत्पादन चरण के दौरान रोल नियंत्रण के लिए 100 N प्रणोदक के 4 युग्मों के साथ एक गैसीय नाइट्रोजन (GN2) आधारित शीत गैस लोट नियंत्रण प्रणाली।

एविओनिकी व जड़त्वीय प्रणाली

नौसंचालन, निर्देशन व नियंत्रण (एनजीसी), दूरमिति व दूरादेश (टीटीसी), पाइरो, उपकरण व पावर प्रणाली एविओनिकी को पूरक द्वि अतिरेक विधा में पूरा करने की योजना है।

अभियान लक्ष्य

परीक्षण यान के मुख्य उद्देश्य निम्नानुसार हैं:

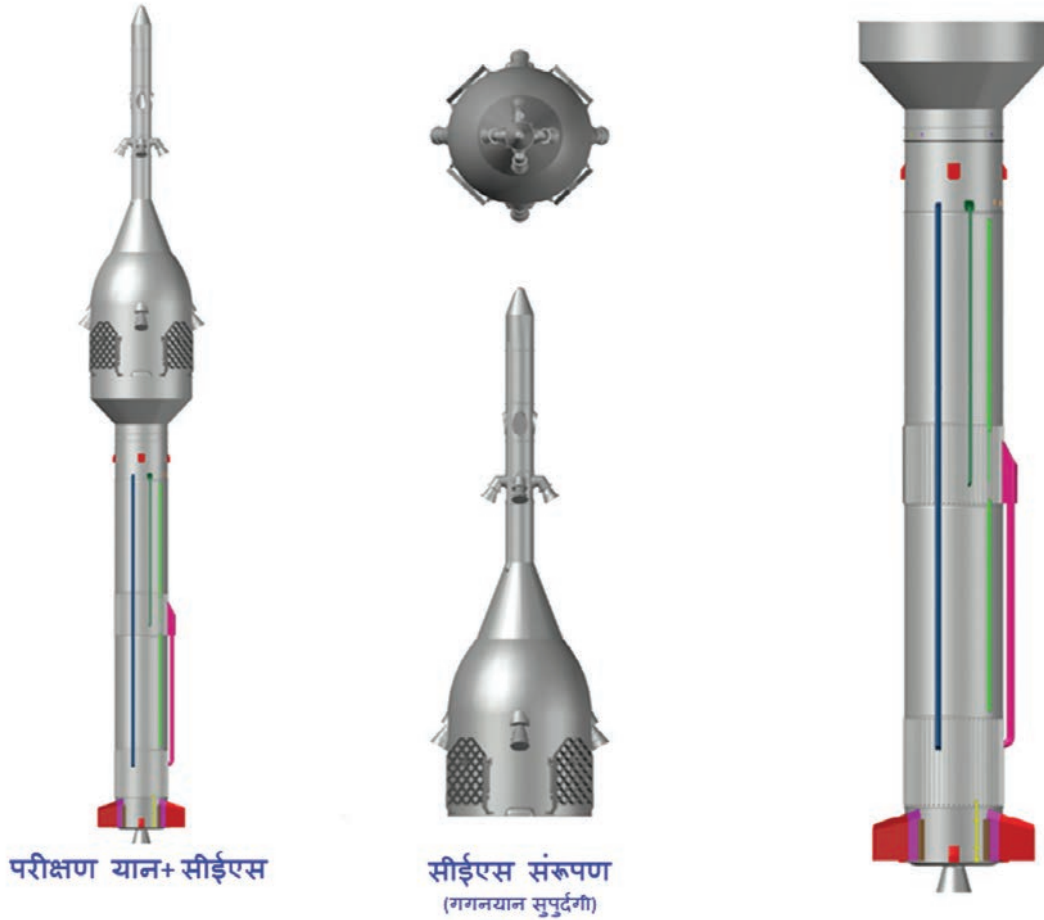
1. परीक्षण यान चरण

- उड़ान में 'सीईएस + परीक्षण यान' के वायुगतिक संरूपण का वैधीकरण।
- हैमर हेड वाहन संरूपण के लिए वाहन संरचनात्मक गतिकी के साथ विभिन्न वाहन चरणों के दौरान दो समतल ईजीसी, एफडीसी व आरसीएस की नियंत्रण प्रणाली का वैधीकरण।
- नए घटक, जैसे प्रमोचन स्थगन व मोचन प्रणाली (एलएचआरएस), एकीकृत नियंत्रण प्रवर्तन प्रणाली (आइसीएस), बेतार यंत्रीकरण प्रणाली (डब्ल्यूआइएस), नव वाहन संरचना व पृथक्करण प्रणाली, आरसीएस, नाविक सहायता प्राप्त मिन्स आदि का वैधीकरण।
- निर्दिष्ट लक्ष्य पिल बॉक्स स्थिति में सीईएस को रखना तथा उच्च वायुगतिकीय पर्यावरण के अधीन सुरक्षित पृथक्करण प्रदर्शन।

2. सीईएस चरण

- जेट की उपस्थिति तथा अनुपस्थिति में सीईएस स्वतंत्र उड़ान संरूपण की जांच व वैधीकरण।
- विविध द्रुत क्रियाशील (फास्ट एक्टिंग) विशेष उद्देशीय मोटर का निष्पादन वैधीकरण।
- सीईएस अनुक्रमित्र, सीईएस संरचना व विविध पृथक्करण प्रणालियों का वैधीकरण।
- उड़ान के दौरान गिंड फिन प्रस्तरण।
- सीईएस से कर्मिंदल मॉड्यूल (सीएम) के सुरक्षित पृथक्करण का प्रदर्शन।





चित्र 1 - सीईएस के साथ परीक्षण यान का स्कीमैटिक आरेख

3. सीएम-कर्मिंदल मॉड्यूल चरण

- पार्श्विक सीजी ऑफसेट के साथ सीएम की वायुगतिकीय विशेषताओं का वैधीकरण।
- शीर्ष आवरण पृथक्करण व पैराचूट प्रणालियों का वैधीकरण।
- आरसीएस प्रणोदक के साथ सीएम अनुक्रमित व स्वतंत्र नियंत्रण का वैधीकरण।
- विभिन्न माख संख्याओं में विविध विफलन पिल बॉक्स की आवस्थाओं के लिए पहले परीक्षण यान की योजना बनाई गई थी।

भावी योजना

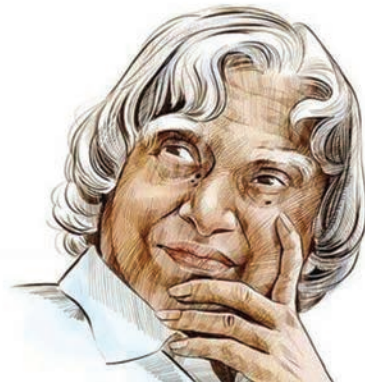
‘परीक्षण यान’ का विकास ‘एडमायर’ कार्यक्रम (उन्नत अभियान व पुनःप्राप्ति प्रयोग) का सबसेट माना जा सकता है, जो कि अन्य उन्नत आर एवं डी प्रदर्शन अभियानों के लिए वाहक यान का काम भी करेगा।

आभार : टीवीपी परियोजना



“
सपने वो नहीं हैं जो
आप नींद में देखें,
सपने वो हैं जो आपको
नींद ही नहीं आने दे।
”

- डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम



अंतरिक्ष गमन क्षमता रखनेवाले देशों के प्रमोचन संबंधी समाचार

फायरफ्लाई एयरोस्पेस का प्रथम अल्फा रॉकेट एक बड़ी विसंगति के फलस्वरूप प्रमोचन के शुरुआत में ही विस्फोटित

फायरफ्लाई एयरोस्पेस कंपनी का पहला अल्फा रॉकेट जिसका प्रमोचन वेंडेनबर्ग स्पेस फोर्स बेस से 03 सितंबर, 2021 को स्थानीय जीएमटी, 01:59 बजे किया गया, अपने आरोहण के प्रथम चरण के दौरान एक विसंगति के आने से नष्ट हो गया। अल्फा रॉकेट से 203 पाउंड (92 किग्रा.) के 'ड्रीम' पेलोड को पृथ्वी से 186 मील (300 कि.मी.) की कक्षा में स्थापित करने की योजना थी। इस अभियान का लक्ष्य अंतरिक्ष के भविष्य के संबंध में मानव के स्वप्नों को साकार करना तथा समूचे विश्व के लोगों को बड़े स्वप्न देखने और तारों तक पहुँचने के लिए प्रेरित करना था। फायरफ्लाई एयरोस्पेस कंपनी केवल अल्फा रॉकेट तक ही खुद को सीमित नहीं रख रहा बल्कि यह बीटा नाम से एक बड़े रॉकेट एवं 2023 में नासा के लिए चंद्रमा के सतह पर पेलोड पहुँचाने हेतु एक रोबोटिक चंद्रमा लैंडर का विकास भी कर रहा है, जिसका नाम ब्लू घोस्ट है।



चित्र आभार : फायरफ्लाई एयरोस्पेस

चीन ने हाइपरस्पेक्ट्रल भू-प्रेक्षण उपग्रह का प्रमोचन किया

06 सितंबर 2021 को चीन के एयरोस्पेस साइंस एंड टेक्नोलॉजी कॉरपोरेशन (सीएएससी) द्वारा ताइयुआन उपग्रह प्रमोचन केंद्र से लॉन्ग मार्च 4सी के रॉकेट द्वारा गाफेन 5 (02) हाइपरस्पेक्ट्रल भू-प्रेक्षण उपग्रह का प्रमोचन किया गया। अमरीकी अंतरिक्ष ट्रेकिंग ने इस उपग्रह की जानकारी देते हुए बताया कि यह उपग्रह 426 मील (685 कि.मी.) ऊंचाई की कक्षा में 98 डिग्री की नति पर है। इस सूर्य-तुल्यकालिक कक्षा का अर्थ है कि उपग्रह प्रत्येक दिन एक ही स्थानीय समय पर पृथ्वी पर एक ही बिंदु से गुजरेगा। सीएएससी ने 2021 में अबतक 30 बार प्रमोचन किया है, जिसमें सभी 30 सफल रहे हैं। सीएएससी

इन-स्पेस का गठन

अंतरिक्ष क्रियाकलापों को करने तथा अंतरिक्ष विभाग के स्वामित्व की सुविधाओं का गैर-सरकारी निजी इकाइयों द्वारा उपयोग करने हेतु अंतरिक्ष विभाग के एक स्वायत्त एजेंसी के रूप में भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन तथा प्राधिकरण केंद्र (इन-स्पेस) का गठन किया गया है। इन-स्पेस एक सिंगलविंडो केंद्रीय एजेंसी के रूप में गैर सरकारी निजी इकाइयों के अंतरिक्ष संबंधी क्रियाकलापों के संवर्धन करने, स्वीकृति देने तथा निगरानी करने का कार्य करेगा। इन-स्पेस के अंतर्गत आनेवाले प्रमुख क्रियाकलापों में प्रमोचक रॉकेटों तथा उपग्रहों का निर्माण, इसरो के नियंत्रणाधीन अंतरिक्ष अवसंरचना तथा परिसरों को साझा करना, निजी इकाइयों द्वारा भारतीय उपग्रह के तौर पर पंजीकरण हेतु अंतरिक्ष यान का निर्माण, प्रचालन तथा नियंत्रण तथा इससे संबंधित अवसंरचना तैयार करना आदि है।

अक्टूबर में तियान्ह अंतरिक्ष स्टेशन मॉड्यूल के साथ-साथ चालक दल के शेनझोउ 13 मिशन के लिए दूसरा कार्गो मिशन शुरू करने की तैयारी कर रहा है। उम्मीद की जा रही है कि ताइयुआन साल के अंत से पहले नई पीढ़ी के लॉन्ग मार्च 6A रॉकेट के प्रथम प्रमोचन की मेजबानी करेगा। रॉकेट केंद्र में एक नया प्रमोचन मंच बनाया गया है। नए प्रमोचक पुराने लॉन्ग मार्च रॉकेट के विपरीत तरल ऑक्सीजन और मिट्टी के तेल का उपयोग करता है। इसमें चार ठोस नोदक बूस्टर भी होंगे और यह पहली बार होगा जब चीन प्रमोचन यान के लिए ठोस एवं द्रव नोदक का सम्मिश्रण करेगा। लॉन्ग मार्च 4C और 6A दोनों एसएसटी द्वारा विकसित किए गए हैं।

रूस द्वारा राज़बेग सर्वेक्षण उपग्रह के साथ सोयुज़ 2.1वी का प्रमोचन

सितंबर 9 को 19:59 UTC पर रूसी रक्षा मंत्रालय के लिए राज़बेग n°1 उपग्रह का वहन करते हुए प्लेस्टस्क कॉस्मोड्रॉम के साइट 43/4 से एक सोयुज़ 2.1वी रॉकेट का प्रमोचन किया गया। राज़बेग n°1 उपग्रह एक छोटे आकार का सैन्य प्रकाशिक सर्वेक्षण उपग्रह है। इसके प्रदायभार का निर्माण रूसी निगम एनपीपी वीएनआईईएम द्वारा किया गया था। इस उपग्रह के युगपत् में बेलारूस की कंपनी ओएओ पेलेंग द्वारा निर्मित एक कैमरा लगा है।

उपग्रह समूह के प्रथम पश्चिम तट प्रमोचन में स्पेस एक्स द्वारा 51 स्टारलिक इंटरनेट उपग्रहों का प्रमोचन

अंतरिक्ष तक स्टारलिक उपग्रहों का वहन कर अपनी ऐतिहासिक 10वीं उड़ान में स्पेस एक्स के प्राचीनतम रॉकेटों में से एक ने, समुद्र में अवतरित होने से पहले, अपने अभियान को सफलतापूर्वक पूरा किया। इस सफल उत्थापन के द्वारा कैलिफोर्निया की अपनी प्रमोचन सुविधाओं से 229-फुट (70 मीटर) लंबे अपने वर्कहॉर्स फाल्कन 9 रॉकेटों में से एक पर स्पेस एक्स ने प्रचालनात्मक स्टारलिक उपग्रहों के एक बैच का प्रमोचन पहली बार किया। दो महीनों से अधिक समय के दौरान स्टारलिक के लिए समर्पित यह प्रथम उड़ान भी थी।



अंतरिक्ष में चीनी लघुसैट प्रमोचक द्वारा सुदूर संवेदक प्रदायभार पहुँचाया गया

ज़ीक्वान अंतरिक्ष केंद्र से 2:19 पूर्वाह्न ईडीटी (0619 जीएमटी; 2:19 अपराह्न बीजिंग समय) सोमवार को चीनी ठोस ईंधन भरा क्वैसौ 1ए रॉकेट उत्थापित किया गया। चीनी पदधारियों ने प्रमोचन को सफल घोषित किया और यू एस सैन्य ट्रैकिंग डेटा ने यह पुष्टि की कि अभियान ने प्रदायभार को भूमध्यरेखा से 97.5 डिग्री नति के साथ पृथ्वी से करीबन 335 मील (540 किलोमीटर) ऊपर एक कक्षा में स्थापित किया है। इस वर्ष चीनी रॉकेट का यह 36वां कक्षीय प्रमोचन, और 34वां सफल प्रयास है।



चित्र आभार : स्पेस एक्स

सफल प्रमोचन के उपरांत चीनी शियान-10 उपग्रह कक्षा में विफल

27 सितंबर, 2021 को 8:20 यूटीसी पर लोग मार्च 3 बी/ई रॉकेट में चीन ने ज़ीचांग उपग्रह प्रमोचन केंद्र से शियान-10 उपग्रह को उत्थापित किया। प्रमोचन से पहले प्रदायभार का नाम व उद्देश्य के बारे में कोई पुष्टीकरण नहीं किया गया था। लेकिन कक्षा में पहुँचने का पुष्टीकरण करते हुए प्रमोचन के कुछ घंटों बाद कक्षा में वस्तु का प्रसूचीकरण किया गया था। बाद में इस प्रमोचन का प्रदायभार, शियान-10 होने का पुष्टीकरण किया गया जिसने प्रमोचन के दौरान असामान्य प्रचालन परिस्थिति का अनुभव किया और असफल घोषित किया गया। जबकि इस उपग्रह का सही उद्देश्य व्यक्त नहीं किया गया था, यह अंदाजा लगाया जा रहा है कि इसे उच्च विभेदक तथा उच्च कक्षा प्रकाशीय सुदूर संवेदन के लिए प्रयुक्त किया जाना था।

वानदेनबर्ग से अट्लस V में नासा का लैंडसैट 9 सफलतापूर्वक प्रमोचित

यूनाइटेड लॉन्च एल्यंस ने अट्लस V रॉकेट में नासा का सबसे शक्तिशाली भू-प्रतिबिंबन उपग्रह, लैंडसैट 9 का प्रमोचन किया। 27 सितंबर, 2021 सोमवार को 11:12 पूर्वाह्न पीडीटी (18:12 यूटीसी) वानदेनबर्ग स्पेस फोर्स बेस में अंतरिक्ष प्रमोचन कॉम्प्लेक्स-3 पूरब (एसएलसी-3ई) से इसका उत्थापन हुआ। पृथ्वी पर भू-संसाधनों के मॉनीटरन, समझ व प्रबंधन में उपग्रह सहायक सिद्ध होगी। पृथ्वी के सतह के अधिकतर हिस्सों और पृथ्वी के 98 प्रतिशत बर्फ की चट्टानों को यह उपग्रह देख पाएगा।



सोयूज़ मिशन द्वारा 34 वनवेब उपग्रह का कक्षा में प्रमोचन

एरियनस्पेस तथा स्टारसेम ने वनवेब तारामंडल के 34 और इंटरनेट संचार उपग्रहों को निम्न भू कक्षा(एलईओ) में प्रमोचित किया। मंगलवार, 14 सितंबर, 2021 को कज़ाकिस्तान के बैकानूर कोस्मोड्रोम के साइट 31/6 से सोयूज़ 2.1बी/फ्रीगैट रॉकेट से यह प्रमोचन हुआ। 34 वनवेब उपग्रह मिशन ने 5,510 कि.ग्रा. के कुल उत्पादन द्रव्यमान का संवहन किया। प्रत्येक उपग्रह में 147.5 कि.ग्रा. का व्यक्तिगत द्रव्यमान है तथा यह एन एन्टेना से सज्जित है जो संचार के लिए केयू-बैंड का समर्थन करता है तथा 12-18 GHz विद्युतचुंबकीय स्पेक्ट्रम में कार्य कर सकता है। पहले चरण में मात्र दो का विमोचन करते हुए वनवेब उपग्रहों को चरणों में प्रस्तरीत किया गया। उसके बाद, प्रत्येक चरण में 4 उपग्रहों को शामिल किया गया।



स्पेस एक्स द्वारा ऐतिहासिक इन्स्पिरेशन4 उड़ान में चार नागरिकों का प्रमोचन

केप कैनेवरेल, फ्लो.- स्पेस एक्स ने आम नागरिकों के एक दल को पृथ्वी के चारों ओर भ्रमण करने हेतु प्रमोचित करते हुए 16 सितंबर, 2021 को एक इतिहास रचा। इन्स्पिरेशन4 मिशन, फ्लोरिडा से नासा केन्नडी अंतरिक्ष केंद्र के पैड 39A से विक्षेपित हुआ। इन्स्पिरेशन4 मिशन, स्पेसएक्स वर्कहॉर्स फाल्कन 9 रॉकेट के लिए 128वीं उड़ान थी। उत्पादन के 10 मिनट बाद, उड़ान के लिए चयनित वाहन पृथ्वी पर वापस पहुंचा। बूस्टर, स्पेसएक्स के एक ड्रोनशिप पर आकर उतरा तथा इसने कंपनी के 92वीं सफल अवतरण को अंकित किया। वाहन का ईंधन आरपी-1, जो कि कार्बन आधारित रॉकेट ग्रेड केरोसीन है तथा ज्वलन के दौरान एक कालिख उत्पादित करता है। पृथ्वी पर वापसी यात्रा के दौरान इस कालिख को रॉकेट में ही वापस निक्षेपित कर दिया जाता है। एक बार पोर्ट में बूस्टर

की वापसी पर इसे पुनर्सज्जित किया जाता है तथा फिर से उड़ान भरने के लिए तैयार किया जाता है।

चीन द्वारा नए अंतरिक्ष स्टेशन में टियानज़ो 3 कार्गोशिप का प्रमोचन

टियानज़ो 3, टियाने कोर मॉड्यूल को अपने नए अंतरिक्षयात्री कर्मियों के आगमन की तैयारी के लिए मदद करेगा। अंतरिक्षयात्रियों द्वारा कक्षण आउटपोस्ट से खाना होने के कुछ दिनों बाद चीन ने अपने नए अंतरिक्ष स्टेशन में एक कार्गो शिप को उत्पादित किया। रोबोटिक टियानज़ो 3 मालवाही से शीर्षित रॉकेट, दक्षिण चीन हैनान प्रांत के वेनचैंग उपग्रह प्रमोचन केंद्र से 20 सितंबर, 2021 को उत्पादित हुआ। 35 फुट लंबे (10.6 मी.) टियानज़ो 3 में पाउंड में हज़ारों की तादाद में सामान, वैज्ञानिक उपकरण तथा नोदक हैं, जो टियाने को उसके अगले अंतरिक्षयात्री कर्मियों के लिए तैयार करेगा। टियाने, टियांगोंग (स्वर्गीय महल) नामक त्रि-घटकीय अंतरिक्ष स्टेशन का केंद्र है। चीन इस भवन का काम 2022 तक पूरा करने का लक्ष्य करता है। टियांगोंग को पूरी तरह समुच्चयित तथा सज्जित करने में कुल 11 प्रमोचनों की आवश्यकता होगी और यह अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन(आइएसएस) से लगभग 20% बड़ा होगा।



चित्र आभार : सीएससी

समाचार स्रोत साभार : पुस्तकालय, वीएसएससी

नासा के अगले चांद्र अभियान में भारतीय मूल के व्यक्ति भी : राजा चारी और आर्टेमिस

राजा जॉन वूरपुतूर चारी का जन्म 24 जून, 1977 को अमरीका के विस्कॉन्स में हुआ था। चारी का परिवार हैदराबाद से अमरीका जा बसनेवालों में से एक था। अमरीका जाते समय राजा चारी के पिता श्रीनिवास चारी की सबसे बड़ी अभिलाषा थी इंजीनियरी में उत्कृष्ट उपाधि प्राप्त करना। उनका मानना था कि बेहतरीन शिक्षा से बड़ा कुछ नहीं है। जब उनके बेटे राजा चारी का जन्म हुआ, तो उन्होंने अपने बेटे को भी यही बात सिखाई। इसलिए राजा चारी, जो अपने पिता से कहानियाँ सुनकर बड़े हुए थे, अपनी पढ़ाई को लेकर बहुत उत्साहित थे। अपने पिता की कहानियों में, चारी की पसंदीदा कहानियाँ अंतरिक्ष यात्रा से संबंधित थी। 'मुझे भी अंतरिक्ष जाना है' छोटा चारी अपनी

माँ से कहता था। इसके लिए अच्छी तरह पढ़ाई करने की आवश्यकता पर माँ ज़ोर दिया करती थी। चारी पढ़ाई में होशियार था। पढ़ाई के हर पड़ाव पर चारी ने अंतरिक्ष यात्रा का सपना देखा। स्कूल के बाद उन्होंने अपने सपने की ओर पहला कदम उठाया। अमरीकी वायु सेना अकादमी से अंतरिक्ष यात्री इंजीनियरी में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। यह अध्ययन का ऐसा क्षेत्र था जिसमें बहुत अधिक मेहनत की आवश्यकता पड़ती है। उन्होंने जागते-सोते अंतरिक्ष का सपना देखा। उन्होंने मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलजी में चार्ल्स स्टार्क ड्रेपर प्रयोगशाला से फैलोशिप प्राप्त की। वहाँ उन्होंने ऑटोमेटेड ऑर्बिटल रॉनडिबू का अध्ययन किया और अंतरिक्ष यात्रा और वैमानिकी में स्नातकोत्तर की उपाधि हासिल की।



सहीर एस
सहायक, एसटीएस



स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के बाद, चारी अमरीकी वायु सेना में शामिल हो गए। पहले कदम के रूप में, वान्स वायु सेना बेस में स्नातक पायलट प्रशिक्षण में भाग लिया। उन्होंने सीमोर जॉनसन वायु सेना बेस में एफ -15 ई स्ट्राइक ईगल प्रशिक्षण में भाग लिया तथा बाद में एल्मडॉर्फ वायु सेना बेस और रॉयल एयर फोर्स लेकनहीथ में तैनात हो गए और ऑपरेशन इराकी फ्रीडम को समर्थन दिया। अमरीकी नौसेना परीक्षण पायलट स्कूल में भर्ती होनेवाले चारी, एग्लिनवायु सेना अड्डे पर एक परीक्षण पायलट रहे। चारी ने अमरीकी सेना कमान्ड के जनरल स्टाफ कॉलेज में पढ़ाई की और सेनकॉम टाइम सेंसिटिव टारगेटिंग ऑफिसर के रूप में कार्य किया। 39 साल की उम्र में, उन्हें 461 फ्लाइट टेस्ट स्क्वाड के कमांडर के रूप में पदोन्नत किया गया।

नासा के अंतरिक्ष अभियान में भाग लेने के लिए चारी ने भी आवेदन दिया। उस समय 18,000 आवेदक थे! वर्ष 2017 में, अमरीकी उपराष्ट्रपति ने अंतरिक्ष अभियान के लिए चुने गए 12 लोगों की घोषणा की। उनमें से एक राजा जॉन चारी थे। सालों की मेहनत का नतीजा! चारी की टीम ने बुनियादी प्रशिक्षण के 2 साल पूरे कर लिए हैं। 2024 में चंद्रमा पर चलने के लिए पहली महिला को भेजने सहित विविध चांद्र अभियानों के लिए मार्ग प्रशस्त करने के लक्ष्य के साथ गठित अंतरिक्ष यात्रियों की आर्टेमिस टीम के हिस्से के रूप में चारी को दिसंबर, 2020 में चुना गया। उसी महीने में, वे नासा के एस्ट्रोनाट समूह 22 से स्पेस एक्स क्रू - 3 अंतरिक्ष मिशन के प्रमुख चुने जानेवाले पहले



अंतरिक्ष यात्री बन गए।

अब समय आ गया है अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के लिए यात्रा करने का, जिसके सपने वे बचपन से देखा करते थे... यहां हम एपीजे अब्दुल कलाम के शब्दों को याद कर सकते हैं। 'सपना नींद में दिखनेवाला नहीं, बल्कि नींद से उठानेवाला होना चाहिए।' नींद से जगानेवाले हमारे सपनों की यात्रा जारी रहे।

संदर्भ - विकीपीडिया तथा ऑनलाइन न्यूज़पेपर



पूर्व संपादक की बिदाई

35 वर्षों के लंबे कार्यकाल के बाद 'गगन' की संपादकीय समिति के अध्यक्ष/मुख्य संपादक सेवानिवृत्त हुए। 'गगन' के मुख्य संपादक के रूप में उन्होंने 10 वर्षों तक अपनी सेवा दी। उनके कार्यकाल में 'गगन' पत्रिका की पाठ्य सामग्री व इसकी साज-सज्जा में काफी परिवर्तन लाया गया। एक तरफ जहां इस पत्रिका को साहित्य की सभी विधाओं से ओत-प्रोत किया गया, वहीं यह भी ध्यान रखा गया कि हिंदी भाषी के साथ-साथ हिंदीतर भाषी लेखकों को भी पत्रिका में उचित सम्मान मिले। वैज्ञानिक संस्थान की पत्रिका होने के नाते तकनीकी लेखों को भी अनिवार्यतः स्थान देने का प्रयास किया गया। पत्रिका के आवरण पृष्ठ तथा कलेवर को आकर्षक बनाया गया तथा इसमें विषयानुसार चित्रों का समावेश कर पाठकों में जिज्ञासा जागृत करने की कोशिश की गई। इन्हीं सब प्रयासों का परिणाम है कि आज 'गगन' अखिल भारतीय स्तर पर राजभाषा विभाग द्वारा पुरस्कृत हुई है।

श्री अभय कुमार जी अपने व्यवहार और मृदुभाषिता से संपादकीय समिति के सदस्यों के बीच भी काफी पसंद किए जाते थे। उनका हमेशा प्रयास रहता था कि संपादकीय समिति के सभी निर्णय विचार-विमर्श और सर्वसम्मति से किए जाएं। नए लेखकों के आगे लाने और प्रोत्साहित करने के लिए वह विशेष पहल करते थे। तमाम व्यस्तता के बावजूद वे गगन के लिए पर्याप्त वक्त दिया करते थे। हिंदी अनुभाग के प्रत्येक सदस्य उनसे प्रेरित था और अपनी किसी भी प्रकार की शंका या समस्या की स्थिति में उसके निवारण के लिए सीधे संपर्क कर सकता था। उन्होंने सभी को अपने विचार रखने की पूरी स्वतंत्रता दी थी और सकारात्मक सुझावों को हमेशा स्वीकार करते थे।

हिंदी अनुभाग और गगन संपादकीय समिति उनके इस स्तुत्य एवं अनुकरणीय कार्य के लिए हमेशा आभारी रहेगा तथा उनके नक्शे-कदम पर चलकर 'गगन' की गुणवत्ता में वृद्धि लाने हेतु लगातार प्रयास करते रहेंगे।



श्री अभय कुमार जी हिंदी अनुभाग के कर्मियों के साथ

अव्याला सोमयाजूला ललिता ए. ललिता (प्रथम भारतीय महिला अभियंता)



आज के दौर में इंजीनियर बनना इतना कठिन काम नहीं है जितना आज से 80 साल पहले हुआ करता था। ए. ललिता की कहानी किसी प्रेरणादायक महिला के संघर्ष की कहानी से कम नहीं है। वो भारत की प्रथम इलेक्ट्रिकल इंजीनियर थी, वह भी उस दौर में जब भारत में महिलाओं के कंधों पर कुप्रथाओं का बोझ तो था ही, साथ-ही-साथ यह भी मान्यता थी कि शिक्षित औरतें नहीं, बल्कि उनके पति को होना चाहिए। लड़कियों को तो केवल घरेलू कार्य की ही शिक्षा दी जाती थी। बहुत कोशिशों के बाद भारत में गिनी-चुनी कुछ महिला डॉक्टर बनने लगी थीं। परंतु इंजीनियरिंग का क्षेत्र तो पुरुषों के लिए ही जाना जाता था। महिलाओं का इस क्षेत्र में प्रवेश तो दूर की कौड़ी लाने के बराबर था।



ए. ललिता का जीवन

ए. ललिता का जन्म 27 अगस्त, 1919 को चेन्नई में हुआ था। ए. ललिता के पिता पप्पू सुब्बा राव एक इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के प्रोफेसर थे। ए. ललिता अपने माता-पिता की पांचवी संतान थी। सात बच्चों के परिवार में लड़कों को तो इंजीनियर बनने की शिक्षा मिली परंतु लड़कियों को बुनियादी शिक्षा तक ही सीमित रखा गया।



अंकुश राज
वैज्ञानिक/इंजीनियर
एमवीआइटी

उस वक्त बाल-विवाह भारतीय समाज में सामान्य-सी बात थी। इसलिए 15 साल की उम्र में ललिता की शादी भी हो गई। 18 साल की उम्र में (1937) ललिता एक बच्ची की मां बन गई और बेटी के जन्म के 4 महीने बाद ही ललिता के पति का देहांत हो गया। पति के देहांत के बाद उनकी सास का गुस्सा ललिता पर निकला। इतना होने के बावजूद भी ललिता ने कभी हिम्मत नहीं हारी।

गौरतलब है कि सती प्रथा जैसी कुप्रथा का चलन दक्षिण के समाज में नहीं था। परंतु इससे विधवा महिला का जीवन सरल नहीं हो जाता था। विधवा विवाह जैसे सामाजिक सुधार के प्रयास शुरू हो गए थे। वे दक्षिण के समाज में सामाजिक स्वीकार्यता की राह देख रहे थे।

ए. ललिता ने अपने संकल्प से इतिहास रच दिया

ललिता ने विधवाओं के लिए तय की गई सामाजिक व्यवस्था को मानने से इनकार कर दिया और अपनी पढ़ाई जारी रखने का फैसला किया। उन्होंने अपने साथ-साथ अपनी बेटी श्यामला के लिए भी यह व्यवस्था की, जिसके साथ वह अपना अधिक-से-अधिक वक्त बिताना चाहती थी। उनका यही फैसला आज कितने ही इंजीनियर लड़कियों के लिए मील का पत्थर साबित हो रहा है। यही वह कदम था जहाँ से इंजीनियरिंग के क्षेत्र में महिलाओं के लिए दरवाजे खुलने लगे।

माँ

अब न रही तलब कुछ भी हासिल करने की,
माँ जो मेरे पास बैठी थी।

हर बेवफाई का सिला कुछ ऐसा रहा,
माँ के लिए प्यार हमारा बढ़ता रहा।

ठोकरों ने जब भी किया जीना मुश्किल,
माँ के साथे तले उम्मीदों के कंकर चुनते रहे।

भरोसा उठ गया था खुदा की फ़िरत पर,
माँ ने सर पर हाथ रखा और
खुदा फिर से खुदा हो गया।

सबसे आसां है माँ को खुश रखना,
बस खुद खुश रहा करो।



एम जी सोम शेखरन नायर
उप निदेशक (रा.भा.)



ए. ललिता का मद्रास कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग का सफर

ललिता अपने जीवन को संवारने के साथ-साथ अपनी बेटी को भी पूरा समय देना चाहती थी और डॉक्टरी का प्रोफेशन इस तरह का था कि किसी भी वक्त आपको अपनी सेवा देनी पड़ सकती थी। वह अपने लिए नौ बजे से पाँच बजे तक की ही नौकरी चाहती थी। पिता व भाइयों के इंजीनियर होने का प्रभाव ललिता पर भी पड़ा।

पिता ने ललिता के इंजीनियर बनने के फैसले का समर्थन किया और मद्रास कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में उनका दाखिला करवाया। ललिता के दाखिले के तुरंत बाद ही दो और छात्राओं ने भी दाखिला लिया। जिनका नाम लीलाम्मा जॉर्ज और पी के थ्रेसिया था। ललिता ने इलेक्ट्रिकल और इन दोनों छात्राओं ने सिविल इंजीनियरिंग में दाखिला लिया। इन तीनों ने हॉस्टल में एक-दूसरे का साथ बखूबी निभाया और वर्ष 1943 में इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल कर ली जिसमें HE के स्थान पर SHE का पहली बार प्रयोग किया गया।

भारत की प्रथम महिला इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, ए. ललिता ने इंजीनियरिंग की शुरुआत बिहार के जमालपुर के रेलवे वर्कशॉप में एक साल की एप्रेंटिसरी से की। कुछ साल सेंट्रल स्टैटेड आर्गनाइज़ेशन ऑफ इंडिया, शिमला में बतौर

असिस्टेंट इंजीनियर काम किया। साथ-ही-साथ इंस्टिट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स लंदन, यूके की ग्राजुएटशिप ऑफ इंजीनियर्स की परीक्षा भी दी। ललिता अपने पिता के साथ रिसर्च में भी जुड़ी रहीं।

अपनी आर्थिक समस्या को दूर करने के लिए उन्होंने वर्ष 1948 में एसोसिएट इलेक्ट्रिकल इंडस्ट्रीस में कार्यभार ग्रहण कर लिया। भारत के सबसे बड़े भाखड़ा नांगल बांध के लिए जेनरेटर प्रोजेक्ट उनके प्रसिद्ध कामों में से एक है।

ए. ललिता को अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भी सम्मानित किया गया। वर्ष 1964 में न्यूयॉर्क में आयोजित पहले इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑफ वुमन इंजीनियर एण्ड साइंटिस्ट में ललिता को आमंत्रित किया गया।

अगर ललिता एक विधवा के तरह जीवन जीना स्वीकार कर लेती तो यह मुकाम वह अपने जीवन में कभी हासिल नहीं कर पाती। उन्होंने केवल अपने लिए ही नहीं बल्कि देश की सभी महिलाओं के लिए इंजीनियर बनने के रास्ते खोल दिए।

ललिता ने 60 वर्ष की आयु में एक गरिमापूर्ण जीवन जीते हुए इस दुनिया को अलविदा किया और भारत के लिए बेमिसाल प्रेरणादायक कहानी छोड़ गईं।

अभी पास... और अब यह दूरी...



अक्षया मुरलीधरन
डॉ. जी. संतोष जी की भांजी

राघव, एक 12 वर्ष का बालक, मुंबई शहर के नरिमन पॉइंट पर खड़ा, उस सुंदर क्षितिज को निहार रहा था। उसे अपने बड़े परिवार पर गर्व था। उसके दादा-दादी, नाना-नानी, चाचा-चाची, भाई-बहन एवं माता-पिता एक ही छत के नीचे रहते थे। राघव को बहुत लाड़-प्यार मिलता था। उस घर में प्रतिदिन खूब बातें व हँसी-मज़ाक चलता रहता था।

कुछ दिनों बाद, राघव के पिता एक छोटे मेहमान को घर लेकर आए। उस मेहमान का नाम 'स्मार्ट फोन' था। बाद में यह वस्तु सभी सदस्यों के पास भी आ गई। चाची जी दर्पण से ज़्यादा फोन को देखने लगीं। राघव के भाई-बहन ने खेलना तक उसी वस्तु के साथ कर लिया। दादा जी उससे भजन सुनने लगे। राघव को समझ में नहीं आया कि उस चीज़ में ऐसी क्या खास बात है? सभी लोग उस आधुनिक चीज़ पर लगे रहते। अब उसके घर में कोई आपस में बात ही नहीं करते थे और वह बिलकुल अकेला हो गया।

“कैसे आ गई यह आपसी दूरी और जीवन बन गया अधूरा।” सोचते-सोचते, राघव ज़ोर से रो पड़ा। पूरा परिवार दौड़कर उसके पास आया और सबने पूछा, “क्या हुआ?” तब राघव ने कहा, “इस घर में बातचीत के स्थान पर केवल एसएमएस व रिंगटोन की धुनें क्यों सुनाई दे रही हैं? आपसी बातचीत के बिना खुशियों की लहर कैसे दौड़ेगी?” यह सुनते ही सभी दंग रह गए और उन सभी को जैसे वास्तविकता का बोध हुआ कि वे सभी किस प्रकार टेक्नॉलजी के भंवर में फँसे जा रहे थे। उस दिन से राघव का घर पुनः प्रेम से खिल उठा। तब राघव ने सोचा, “स्मार्ट फोन तब स्मार्ट बनेगा जब वह घरों को जोड़े, न कि तोड़े और न नज़दीकियों को दूरी में परिवर्तित करे, करे तो बस दूरी को नज़दीकी बनाए।”





कृष्ण मुरारी
हिंदी टंकक, पीजीए

यह लाल रंग की बात है

12 की उम्र में बहन अभी नादान थी!
लाल रंग के बुरे रीति-रिवाजों से अनजान थी!!
पहली बार बिलखती हुई, पीड़ा से तड़पती हुई,
मां को खून के छीटे का हाल सुनाती है!
मां ने कहा, शुशु... ज़्यादा शोर मत कर,
हो गई तू अशुद्ध चुपचाप दर्द को सहन कर... कहकर,
माहवारी के तकलीफों को खामोशी से
झेलने का पाठ पढ़ाती है!!
महिला ही समझती इन बातों को असामाजिक,
कैसा यह समाज है!
यह लाल रंग की बात है, यह लाल रंग की बात है!!
पिताजी ने कहा, क्या हुआ...आज स्कूल नहीं है जाना!
मां के द्वारा सुझाया गया, बताया उसने सिर दर्द का बहाना!!
दादी ने कर दिया खाने के लिए अलग थाली,
सोने के लिए अलग बिस्तर!
छिपाने लगी बहन दर्द को झूठी हँसी का ढोंग रचकर,
विधाता के द्वारा रची कृति को छिपाना है, पर्दे में रहकर!!

आखिर कैसी यह दयनीय हालात है!
यह लाल रंग की बात है, यह लाल रंग की बात है!!
आज इस देश में नारी को लक्ष्मी, देवी कहकर पूजते हैं!
और फिर माहवारी के दिनों में अछूत कहकर,
पवित्र-स्थलों को उनके लिए बंद करते हैं,
कहीं रसोई में जाना, भोजन हाथ लगाना भी पाप समझते
हैं!!!
अरे! यह तो नए संतान के वजूद के लिए ईश्वर की सौगात है!
यह लाल रंग की बात है, यह लाल रंग की बात है!!
जीवन का होता यह स्वाभाविक दौर इससे कैसे घबराना!
अब छोटी सोच से ऊपर उठकर इस
प्राकृतिक प्रकरण को सामान्य है बनाना,
पिता हो, भाई हो या हो पति...,
एक हमदर्द बनकर उनके दर्द को मुस्कान में है बदलना!!
यह न कोई पाप है और न कोई अभिशाप है!
यह लाल रंग की बात है, यह लाल रंग की बात है!!

हरिद्वार हिंदुओं के लिए सात पवित्र धार्मिक स्थानों में से एक है। आमतौर पर मान्यता है कि यह देवताओं तक पहुंचने का प्रवेशद्वार है। यही वह जगह है, जहां आदिगंगा हिमालय की पर्वत-श्रृंखलाओं से उतर कर इस धरती को जलायमान करती है। प्रति सप्ताह हज़ारों की संख्या में यहां श्रद्धालु आकर गंगा की पवित्र धारा में स्नान करते हैं और शाम के वक्त गंगा आरती में भाग लेते हैं।

हरिद्वार एक ऐसी जगह है, जहां के सभी कोणों, घाटों के साथ कोई-न-कोई दंतकथा ज़रूर जुड़ी है। कथाएं तो यहां जैसे बिखरी पड़ी हैं। यही वजह है कि श्रद्धालु भले ही कई बार इस पावन नगरी का दौरा करते हैं, लेकिन इस स्थान के संबंध में बहुत थोड़ा जानते हैं।

अगली बार अगर आप यहां आए तो इन पर ज़रूर ध्यान दें।

- पर्वतों के नीचे तराई में हरिद्वार ही वह पहला स्थान है, जहां पवित्र नदी गंगा का अवतरण होता है।
ऐसा माना जाता है कि सतयुग में राजा भागीरथी के अथक प्रयासों की वजह से गंगा पृथ्वी पर आकर उनके पूर्वजों के पापों को धोने को तैयार हुई।
- हरिद्वार की नगरी उन चार स्थानों में से एक है, जहां कुंभ मेला का आयोजन किया जाता है।

अन्य तीन स्थान हैं :- इलाहाबाद, नासिक और उज्जैन । महा कुंभ का आयोजन 12 वर्ष में एक बार अलग-अलग स्थानों पर किया जाता है।



अनिल कुमार गर्ग
वैज्ञानिक/इंजीनियर
एम-कैड

- प्रतिदिन शाम को सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालु 'हर की पौड़ी' में जमा होते हैं और देवी गंगा की प्रार्थना, आरती करते हैं।
- श्रद्धालु दिए जलाकर गंगा में प्रवाहित करते हैं। यह दृश्य अद्भुत होता है। 'हर की पौड़ी' का शाब्दिक अर्थ-भगवान शिव के पदचिह्न से है।
- हरिद्वार अपने स्ट्रीट फुड के लिए भी मशहूर है। यह इतना सस्ता और सुलभ है कि आप एकबारगी विश्वास नहीं कर सकेंगे। हरिद्वार की पुरानी गलियों में आप हर तरह के स्थानीय भोजन का ज़ायका ले सकते हैं।
चाट-पापड़ी से शुरू कीजिए और जलेबी और बादाम-दूध से खत्म। अगर आपके पेट में अब भी जगह बची हो तो फिर कुल्फी और फालूदा का ज़ायका लीजिए। सच में, मज़ा आ जाएगा।
मोहनजी पूड़ीवाले की आलू पूड़ी और कश्यप कचौड़ीवाले की कचौड़ियों का ज़ायका लेना मत भूलिए। अगर बेहतरीन मिठाई का स्वाद चखना हो तो फिर मथुरा वालों की प्राचीन दुकान तक जा सकते हैं।
- हरिद्वार की नगरी योगाभ्यास करने वालों के लिए मक्का है।
यहां एक से एक योग के आश्रम हैं, जहां अग्रिम बुकिंग की जा सकती है। हरिद्वार में दिव्य योग मंदिर ट्रस्ट विश्वविद्यालय है।
- रोप-वे, जिसे यहां उड़न-खटोला भी कहा जाता है, का इस्तेमाल करते हुए आप चंडी देवी और मनसा देवी के मंदिरों तक जा सकते हैं।
मान्यता है कि हरिद्वार पर पहाड़ी पर स्थित मनसा देवी के मंदिर में जाने से श्रद्धालुओं की मनोकामना पूरी होती है। कहा जाता है, अगर आप सच्चे मन से देवी से कुछ मांगेंगे तो वह आपकी इच्छा पूरी करती हैं।
मंदिर, भगवान और देवताओं के दर्शन हो गए हों तो अब अपर रोड मार्केट में थोड़ी खरीदारी भी की जाए।
मोतीबाज़ार के सामने आपको दुकानों की लंबी कतार मिलेगी, जहां से आप हस्तशिल्प की सामग्रियां खरीद

सकते हैं। ऊनी कपड़े या फिर दूसरे सजावट के सामान, यहां सब कुछ उपलब्ध है।

- हरिद्वार का ऐतिहासिक मोती बाज़ार उतना ही पुराना है, जितना की यह शहर।

बाज़ार में खरीदारी के दौरान ही आप जलेबी, छोले-भटूरे और रसगुल्लों का आनंद ले सकते हैं।

- इस पावन नगरी में स्थित सैकड़ों छोटे-बड़े मंदिरों के बीच 13वीं सदी में निर्मित एक प्रसिद्ध दरगाह भी है।

इसे पीरन कलियार के नाम से जानते हैं। कहा जाता है कि इस खूबसूरत दरगाह को इब्राहिम लोदी ने बनवाया था। यहां सूफी संत अलाउद्दीन अली अहमद सबीर कलियारी को दफनाया गया था।

- शांतिकुंज आने पर आपको पता चलता है कि हरिद्वार में न केवल हिंदुत्व की जड़ें गहरी हैं, बल्कि यह शहर आयुर्वेद का भी है।

शांतिकुंज को आयुर्वेद के अनुसंधान के लिए दुनिया भर में जाना जाता है। समस्त विश्व के कल्याणार्थ एक यज्ञ का आयोजन यहां हमेशा चलता रहता है।

- पुराने ज़माने का टांगा या टुक-टुक रिक्शा पर चढ़ने का शौक है तो हरिद्वार आपके लिए बेहतर जगह है।

हरिद्वार दुनिया का संभवतः अंतिम शहर बचा है, जहां टांगा और टांगेवाले अब भी आपको मिल जाएंगे। अगर आप चाहें तो पूरे दिन के लिए टांगा किराए पर ले सकते हैं और पूरा शहर देख सकते हैं।

- हरिद्वार का परमेश्वर महादेव मंदिर में शिवलिंग पारे (मेर्कुरी) का बना हुआ है।

पारे का बना शिवलिंग अपने आप में दुर्लभ है। माना जाता है कि बलुआ पत्थर से निर्मित यह मंदिर सूर्योदय से ठीक पहले और सूर्यास्त के ठीक बाद विस्मयकारी और रहस्यमयी प्रतीत होता है। यह मंदिर अपने रुद्राक्ष के वृक्ष की वजह से भी बेहद चर्चित है।

- एकांत की तलाश में आए लोग बिरला घाट पर चले जाते हैं। यह हरिद्वार के सबसे पुराने घाटों में से एक है।

हर की पौड़ी से विपरीत यहां शांति, नीरवता होती है।

- यहां एक मंदिर भारत मां को समर्पित है।

इसे भारत माता का मंदिर कहा जाता है।

- कुशवार्ता घाट के बारे में मान्यता है कि यहां महात्मा दत्तात्रेय ने अपने एक पैर पर खड़े होकर हज़ारों साल तक तप किया था।

इसी घाट पर लोग दिवंगत आत्माओं की मुक्ति और शांति का अनुष्ठान भी करते हैं।

- यहां दक्ष प्रजापति का मंदिर भी है।

यह उस प्रसिद्ध स्थान पर बनाया गया है, जिसके बारे में मान्यता है कि यहां राजा दक्ष ने उस यज्ञ का आयोजन किया था, जिसमें सती ने खुद को भस्म कर लिया था। यज्ञ की जिस अग्नि में सती ने खुद का दाह कर लिया था, वह अग्नि अब भी जल रही है।

- हरिद्वार में माता वैष्णो देवी के मंदिर की एक प्रतिमूर्ति भी है।

अगर आप कटरा स्थित वैष्णो देवी मंदिर जाने से चूक गए हों तो, यहां जाकर दर्शन करना एक अच्छा मौका साबित हो सकता है।

- हरिद्वार में शनिदेव का मंदिर अपने आप में अभिनव है। यहां शनिदेव एक स्तंभ के रूप में हैं।

इस स्थल पर 12 अलग-अलग देवताओं के स्तंभ हैं, जिनकी पूजा-अर्चना की जाती है।

- हरिद्वार दुनिया के सबसे पुराने शहरों में से एक है। इसके बारे में कहा जाता है कि इस नगरी की स्थापना ईसा से 1700 साल पहले हुई थी।

चीनी साहित्यकार ह्वेन सांग ने 629 ई. में इस शहर के बारे में लिखा था।

- इस शहर को 1886 ई. में रेल नेटवर्क से जोड़ दिया गया था।

उस दौर में भारत के लोग बैलगाड़ियों और टांगों पर सफर किया करते थे। हरिद्वार में रेल की पटरी 1886 में पहुंची और इसे 1900 तक देहरादून ले जाया गया।

- हरिद्वार के और भी कई नाम हैं, जैसे कपिलस्थान, गंगाद्वार और मायापुरी।

- हरिद्वार के संबंध में मान्यता है कि यह चार धाम यात्रा का प्रवेश द्वार है।

जो श्रद्धालु चार धाम की यात्रा पर जाना चाहते हैं, उन्हें अपनी यात्रा हरिद्वार से ही शुरू करनी होती है। ●●●





विजेंद्र कुमार
वैज्ञानिक/इंजीनियर
पीसीएम

आपराधिक कृत्य- “दोषी कौन”

यह कहानी एक ऐसे व्यक्ति की है जिसे अब तक समझ में नहीं आया कि जो अपराध हुआ, वास्तव में उसका दोषी कौन था। दरअसल रामकुमार (काल्पनिक नाम) ने तेरह वर्ष पहले पासपोर्ट बनवाने हेतु लखनऊ के पासपोर्ट कार्यालय में ऑनलाइन आवेदन किया था। जब स्थानीय पुलिस के द्वारा उसको फोन आया कि आप थाने में आकर अपना सत्यापन कराइए तो उन्हें बहुत खुशी हुई। जब वह पुलिस थाने पहुंचे तो थानेदार ने सत्यापन के विवरण को पासपोर्ट कार्यालय, लखनऊ भेजने के एवज में पाँच सौ रुपये सुविधा शुल्क (घूस) मांगा तो राम ने कहा कि अभी मेरे पास केवल चार सौ रुपये ही हैं। खैर, थानेदार को वह केवल चार सौ रुपये ही खुशी-खुशी देकर घर आ गए क्योंकि उन्होंने अपनी सूझ-बूझ से सौ रुपये बचा लिए थे, परंतु उसके कारण उसको होनेवाली असुविधा का संज्ञान तक न था।

इधर थानेदार ने उचित सुविधा शुल्क न मिलने के कारण पासपोर्ट कार्यालय में गलत विवरण भेज दिया कि इस नाम का कोई व्यक्ति उस गाँव में नहीं मिला है। कुछ महीने बीतने के बाद जब राम का पासपोर्ट घर नहीं आया तो उन्होंने अपने आवेदन के बारे में लखनऊ जाकर पता किया तो ज्ञात हुआ कि

पुलिस द्वारा अभ्यर्थी का सत्यापन विवरण सही नहीं पाया गया है। इसलिए उन्हें पुनः शुल्क के साथ आवेदन करना पड़ेगा। राम यह जानकर निराश हुआ कि सिर्फ सौ रुपये सुविधा शुल्क में कम होने पर उस थानाधिकारी ने गलत तथ्यों के साथ विवरण भेजकर उसे कितनी असुविधा पहुंचाई है। चूंकि, राम को उस समय पासपोर्ट की बहुत ज़्यादा आवश्यकता नहीं थी इसलिए उन्होंने पासपोर्ट कार्यालय में एक प्रार्थना पत्र देकर आवेदन को निरस्त करने की मांग की और पासपोर्ट कार्यालय के संबंधित अधिकारी ने आवेदन निरस्तीकरण की प्रक्रिया पूरी की। समय बीता और राम दिल्ली में एक सरकारी कार्यालय में कार्यरत हो गया।

लगभग तेरह वर्ष बाद जब पासपोर्ट बनवाने के नियम दुरुस्त किए गए तो राम ने दोबारा पासपोर्ट के लिए ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया शुरू की। आवेदन प्रक्रिया के दौरान एक कॉलम में जाकर वह रुक गए जिसमें लिखा था कि यदि आपने पहले कभी आवेदन किया है तो उसका विवरण प्रस्तुत करें। यदि राम ‘हाँ’ के विकल्प का चयन करते तो तेरह साल पहले का विवरण प्रस्तुत करना पड़ता, जो कि उनके पास अब नहीं था। पुराना विवरण न होने के कारण आवेदन की प्रक्रिया जारी

नहीं रखी जा सकती थी। यदि राम 'न' का विकल्प चुनते तो आगे चलकर मुश्किल हो सकती थी परंतु कम-से-कम आवेदन की प्रक्रिया तो पूरी हो जाती। आगे कुआं और पीछे खाई वाली स्थिति हो गयी थी। कोई और विकल्प नहीं होने के कारण उन्होंने 'न' का विकल्प चुना और ऑनलाइन फॉर्म भरने की प्रक्रिया पूरी की। कुछ दिन बाद राम को सत्यापन हेतु पासपोर्ट कार्यालय में बुलाया गया और पूछा गया कि क्या आपने इससे पहले कभी आवेदन किया था? चूंकि, उन्होंने फॉर्म भरते समय 'न' का विकल्प चुना था तो उसी आधार उन्होंने अपना उत्तर 'न' में दिया।

पासपोर्ट समीक्षा अधिकारी ने बताया कि आपने तेरह साल पहले आवेदन किया था लेकिन पुलिस द्वारा सत्यापन प्रक्रिया पूरी न होने के कारण आपका आवेदन निरस्त हो गया था। राम ने वहीं पर अपना सर पकड़ लिया और अप्रत्याशित रूप से उस अधिकारी को देखने लगे जैसे कि उन्होंने कोई बहुत बड़ा अपराध किया हो। पासपोर्ट समीक्षा अधिकारी ने कहा कि या तो आप इसे निरस्त करके सही सूचना देकर पुनः आवेदन

करें या फिर गलत सूचना एवं तथ्यों को छुपाने के एवज में एक हजार रुपये दंड शुल्क भरकर इसी प्रक्रिया को जारी रख सकते हैं। राम का गला सूख चुका था और वह अपने आपको उस अधिकारी के सामने आपराधिक कृत्य का दोषी होने जैसा महसूस कर रहे थे। उस दिन उन्हें सौ रुपये की अहमियत पता चली जो उन्होंने थानेदार की सुविधा शुल्क न देकर बचाए थे।

तेरह वर्ष बाद उन रुपयों को सूद-समेत वापस करने का समय आ गया था। खैर कोई और विकल्प न होने के कारण उन्होंने दंड शुल्क जमा किया और उसकी रसीद भी प्राप्त की और अंततः पासपोर्ट प्राप्त किया। इस घटना के बाद वह यही सोच रहे थे कि आखिर इस आपराधिक कृत्य में क्या वह वास्तव में दोषी हैं क्योंकि तथ्यों को छिपाने के कारण उनको दंड शुल्क देना पड़ा था। खैर, समस्या का समाधान तो आखिरकार हो गया पर राम कुमार को एक सीख मिल गयी कि असुविधा एवं मानसिक परेशानी से बचने के लिए सही सलाह अति आवश्यक है। जहां कहीं समस्या आती है तो सही माध्यम से संपर्क करके उस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है।



कृष्ण मुरारी
हिंदी टंकक, पीजीए

मौत का सौदागर कोरोना

जन-जन के ज़हन में समाया खौफ़ का मंज़र!
न रहा कोई भी अछूता चाहे हो गाँव या हो शहर!!
फिर वीरान हुई सड़कें, रुकने लगी रौनक-ऐ-चहल पहल!
है छाया मौत के सौदागर कोरोना का कहर!!

इस कदर फैल रही तबाही की यह दूसरी लहर!
चंद लम्हों में सिमट रहा है सांसों का सफ़र!!
बिन मास्क के खुले में सांस लेना लगता है ज़हर!
है छाया मौत के सौदागर कोरोना का कहर!!

कहीं भटक रहे हैं मरीज़ कोविड अस्पताल की तलाश में!
कहीं बिलख रहे परिजन प्राणवायु की हताश में!!
फिर दांव पर लगा प्रवासियों का जीवन और उनका गुज़र-बसर!
है छाया मौत के सौदागर कोरोना का कहर!!

तबाही की कैसी विपदा है आन पड़ी!
लाशों से पटने लगे शमशान, कब्रिस्तान घड़ी दो घड़ी!!
आज भी खड़े हैं 'फ्रंटवॉरियर' जान हथेली पर लेकर!
है छाया मौत के सौदागर कोरोना का कहर!!



प्रशांत गौड़
वैज्ञानिक/इंजीनियर
एसएसआइडी

अंत से अनंत

जो वक्त था चला गया, जो याद थी ठहर गयी
समेटकर यादों को सब, संग अपने ले चला।
रुको ज़रा इक पहर, है बताना कुछ अभी
जो दिल में है मेरे बसा, वो दिखाना है तुम्हें।

कल तलक जो प्यार था, वो आज का इनकार है
कहते थे वो एक जान है, पर आज दो इंसान हैं।
जो शाम है वह ढल गई, रात की तन्हाई में
मैं जागता ही रह गया, नई सुबह की आस में।

कौन कहता है यहां, था कभी भी मैं नहीं
आंख उनकी तब खुली, जब चला था मैं गया
अंत से अनंत तक, रहूंगा मैं यही सदा
फिर देखो तुम उस तरह, जैसे हो यहीं पहली दफ़ा।

मानवता : आज और कल

परमाणु हथियारों के दम पर,
दुनिया को धमकाया जाता है,
छाती चौड़ी करके खुद को,
कद्दावर कहलाया जाता है।

हथियारों के परीक्षणों से,
जीवों का संहार किया,
प्रकाशमय सुबह को तुमने,
काली अमावस रात किया।

लालच और लोभ के मद में,
मानवता को भूल गए,
भूख, प्यास से व्याकुल जीवन,
तुम मरघट पर छोड़ गए।

छोटे से एक वायरस ने अब,
बड़ा पाठ सिखलाया है,
अहंकार की मद में डूबे मानव को,
घुटनों पर बिठाया है।

नहीं खुली जो आंखें अब भी,
महाप्रलय आ जाएगी,
भावी कल के निर्माता तुम,
इतिहास आज बन जाओगे।

अभी आज प्रण ये तुम कर लो,
खुद में बदलाव लाओगे,
मानवता हो जिसका पूरक,
वैसा संसार बनाओगे।



सरपास की कहानी - मेरी ज़ुबानी



बी. वेंकट शिवराम जादव
वैज्ञा./इंजीनियर, एसीएमडी

एक वक़्त था जब मेरा मन हमेशा पर्वतों में बसा रहता था। हालांकि अब भी मैं उनके बारे में सोचता हूँ, लेकिन समय के इस चक्र में उलझ कर अभी उनसे दूर ही हूँ। वो एक दौर था जब कुछ भी करके पर्वतों के गोद में जाकर सोता था। उन्हीं कुछ यादों में से एक किस्सा आपको सुनाना चाहता हूँ। यह कहानी है सरपास की या फिर ऐसा भी बोल सकते हैं कि यह कहानी है मेरे और सरपास की। क्योंकि सरपास की कहानी कई लोगों ने पहले भी सुनाया है, लेकिन यहाँ मैं सरपास के साथ बिताए हुए पलों के बारे में बताना चाहता हूँ।

वर्ष 2012 में जब मैं फूलों की घाटी घूमने गया था। वहाँ से श्री बद्रीनाथ जी के दर्शन करके लौट रहा था, तब मेरे एक सह यात्री/पर्वतारोही ने सरपास की बात छोड़ी। मैंने उत्सुक होकर पूछा – यह सरपास क्या है और कहाँ है? उसने मुस्कुराते हुए बोला-भैया सरपास हिमाचल में स्थित पार्वती घाटी के बीच के एक चोटी/शिखर का नाम। मैंने फिर उनसे पूछा – इस चोटी की क्या खासियत है? क्योंकि इससे पहले भी इसके बारे में सुना था, किंतु जानने की कोशिश नहीं की। उसने बताया कि YHAI के सारे ट्रेकिंग कार्यक्रमों में से सरपास बहुत खास है

और बहुत कठिनाइयों से भरा है। इसलिए YHAI के सदस्य हमेशा अपने जीवन काल में एक बार सरपास जाने की सोचते हैं। उस वक़्त मैंने ठान लिया कि मुझे भी इस सरपास की चोटी पर कभी न कभी चढ़ना है।

फूलों की घाटी से आने के तुरंत बाद मैंने YHAI के वेबसाइट में जाकर सरपास के कार्यक्रम के बारे में ढूँढ़ना शुरू कर दिया। तब 2013 के मई महीने में यह कार्यक्रम आयोजित होने की सूचना मिली। लेकिन जब बुक करना चाहा तो सारे सीट तब तक भर चुके थे। लेकिन अपनी उत्सुकता के कारण मार्च के महीने में मैंने फिर से YHAI का वेबसाइट खोलकर देखा। मुझे मई महीने के 07 तारीख की सीट खाली दिखी, मैंने तुरंत उसे बुक कर लिया और उसकी तैयारियों में जुट गया। अगले दिन से ही मैंने कसरत करना शुरू कर दिया और मीलों दूर चलने की आदत डाल ली।

देखते ही देखते मई महीना आ गया, ऑफिस में छुट्टी लेकर राजधानी ट्रेन से अपना सफर शुरू किया। पहले दिल्ली पहुँचकर सरपास के लिए आवश्यक सामग्री की शॉपिंग कर



ली। मुझे कसोल में रिपोर्ट करना था, जो कि सरपास कार्यक्रम का बेस कैम्प था। अगले दिन मैं मनाली की बस पकड़ कर निकल चला। मेरा अगला स्टेशन था कुल्लू। बस चढ़ते ही मुझे नींद आ गई और सुबह जब आँख खुली तो मैं कुल्लू के आसपास था। कुल्लू के नज़ारे बहुत ही खूबसूरत हैं। दो रास्तों के बीच में से कोई नदी जा रही थी और हमारी बस उनमें से एक रास्ते पर चल रही थी। दूर से हिमालय पर्वत श्रेणी को देख मेरा दिल भर गया। करीब 9 बजे के आसपास मैं कुल्लू में उतर गया और वहाँ से भुंतर तक बस सवारी की। वहाँ से मैंने एक जीप की सवारी ली कसोल तक। कसोल 6500 फीट ऊँचाई पर बसा हुआ एक छोटा-सा गाँव है, और अपनी खूबसूरत वादियों की वजह से बहुत प्रसिद्ध है। जीप वाले ने मुझे सीधा कैम्प के पास ही छोड़ दिया। कसोल पहुँचते-पहुँचते रात हो गई थी। फिर नहाकर सीधे खाने चला गया। उसके बाद हमारे बैच के सारे लोगों से मिलना और परिचय हुआ। सरपास कार्यक्रम के बारे में कैम्प निदेशक ने विस्तार से बताया। सरपास कार्यक्रम 11 दिनों का था, जिसमें हमें रस्सी से कैसे ऊपर चढ़ना और उतरना है, बर्फ पर किस तरीके से चलना है और यदि कोई खतरा हो तो उसका किस तरीके से पता लगाना है, पूरा समझाया।

अगले दिन से हमारा प्रशिक्षण शुरू हो गया। कार्यक्रम के दूसरे दिन हमें पर्वतों से सुपरिचित करने के लिए लंबी वॉक पर ले जाया गया। हमें कसोल से मणिकर्ण और आसपास के गाँव के मंदिर तक लेकर गए। कार्यक्रम के तीसरे दिन हमें चट्टानों पर चढ़ाई (रॉक क्लाइम्बिंग) और रस्सी से ऊपर चढ़ना-उतरना (रिपेल्लिंग) सिखाया गया। इसके लिए पास के जंगल में छोटा-सा कैम्प भी लगाया गया। वापस कसोल आकर हमें सिर्फ सरपास की चढ़ाई के लिए आवश्यक सामान बांध लेने के लिए बोला गया, जो हमने कर लिया।

चौथा दिन हम सभी को कसोल से बस द्वारा घाटीगढ़ (7400 फीट) छोड़ा गया। वहाँ से हमारी पहली ट्रेकिंग शुरू



ट्राफियों में सबसे महत्वपूर्ण

हुई। घाटीगढ़ से अगले कैम्प गलगीथत्व की दूरी 5 किलोमीटर था और 8500 फीट की ऊँचाई को हमने 4 घंटे में ही पार करली। पांचवें दिन गलगीथत्व से 9800 फीट पर स्थित कैम्प कोराथत्व जो सिर्फ 7 कि.मी. की थी और हम आराम से 5 घंटे में पहुँच गए।

छठा दिन हमारा अगला पड़ाव था कैम्प जिरमी, जो कि कैम्प कोराथत्व से सिर्फ 6 कि.मी. के दूरी पर थी, लेकिन 11000 फीट की ऊँचाई पर बसा था। अब तक हम सब जंगल के हरे-भरे रास्ते से आ रहे थे, लेकिन यहाँ से आगे सफ़ेद रंग में लिपटे हुए बर्फ़ीले पहाड़ों का नज़ारा दिख रहा था। हम सब दोपहर के 3 बजे पहुँच गए। ठीक 6.30 को डिनर में गरमा-गरम आलू के पराठे और गरम खीर खाके अपनी-अपनी टेंट में स्लीपिंग बैग्स में सो गए। ठंड के कारण सबको नींद कम आई।

सातवाँ दिन –तिला लोटनी कैम्प जाने के लिए जल्दी ही तैयार हो गए। तिला लोटनी कैम्प 12,500 फीट की ऊँचाई पर था और जिरमी से तिला लोटनी की दूरी सिर्फ 6 कि.मी. थी और चढ़ने के लिए 4 घंटे लगता। लेकिन रात में हल्की-सी बारिश के कारण, पूरा रास्ता फिसल रहा था और बीच में बर्फ के छोटे-छोटे गोलों की बारिश भी हुई। अब हमारा दल 12,000 फीट की ऊँचाई पर था। एक तरफ पहाड़ था और दूसरी तरफ गहरी खाई थी, छोटी-सी भूल हमको खाई में ले जा सकती थी। इसलिए सब लोग हर एक कदम आराम से सोचकर रख रहे थे। हमारे ग्रुप लीडर ने सबका मनोबल बढ़ाया और सबसे आगे चलकर, बर्फ को निकालते हुए सबका हौसला बढ़ाया। जहाँ हमें पहुँचने में 4 घंटे लगने थे, वहाँ पहुँचने में 6-7 घंटे लगे। लेकिन देर ही सही सब लोग सलामत कैम्प पहुँच गए।

12,500 फीट की ऊँचाई पर खड़े होकर चारों ओर देखा, वाह! क्या नज़ारा था। दूर-दूर तक पहाड़-ही पहाड़, कोई इंसान

या कोई गाँव कुछ भी नहीं दिख रहा था। चारों ओर बिलकुल सन्नाटा, हल्की सी ठंडी हवा का झोंका आकर हमारे चेहरे को छू रहा था। दिल को बहुत सुकून मिल रहा था, जैसे फिल्मों में बताते हैं- “दिल गार्डेन गार्डेन हो गया”। मनोहारी दृश्य के बाद पेट पूजा की बारी आई। डिनर यहाँ हमें 5.00 से 6.00 बजे तक खत्म करना था क्योंकि पहाड़ों में दिन जल्दी ढल जाता है और अगले सुबह हमें 3.30 या 4.00 बजे तक अगले कैम्प के लिए रवाना होना था। यहाँ एक और समस्या थी -“पानी”, क्योंकि 12,500 फीट की ऊँचाई और -5 डिग्री तापमान में पानी बिलकुल नहीं मिलेगा। कैम्प के कर्मचारी हमें नीचे से कैन में पानी भर लाकर, यहाँ गरम करके दे रहे थे। सब डिनर करके अपनी स्लीपिंग बैग्स में घुस गए। इतनी ऊँचाई पर टॉयलेट भी एक और समस्या है। इस ऊँचाई पर टॉयलेट जाना भी अपने आप में एक साहसपूर्ण कार्य है क्योंकि ठंड वातावरण में व्यर्थ मिट्टी में घुलता नहीं और ज़्यादा पर्वतारोही के कारण भली-भांति दिखनेवाले पहाड़ प्रदूषित हो जाते हैं।

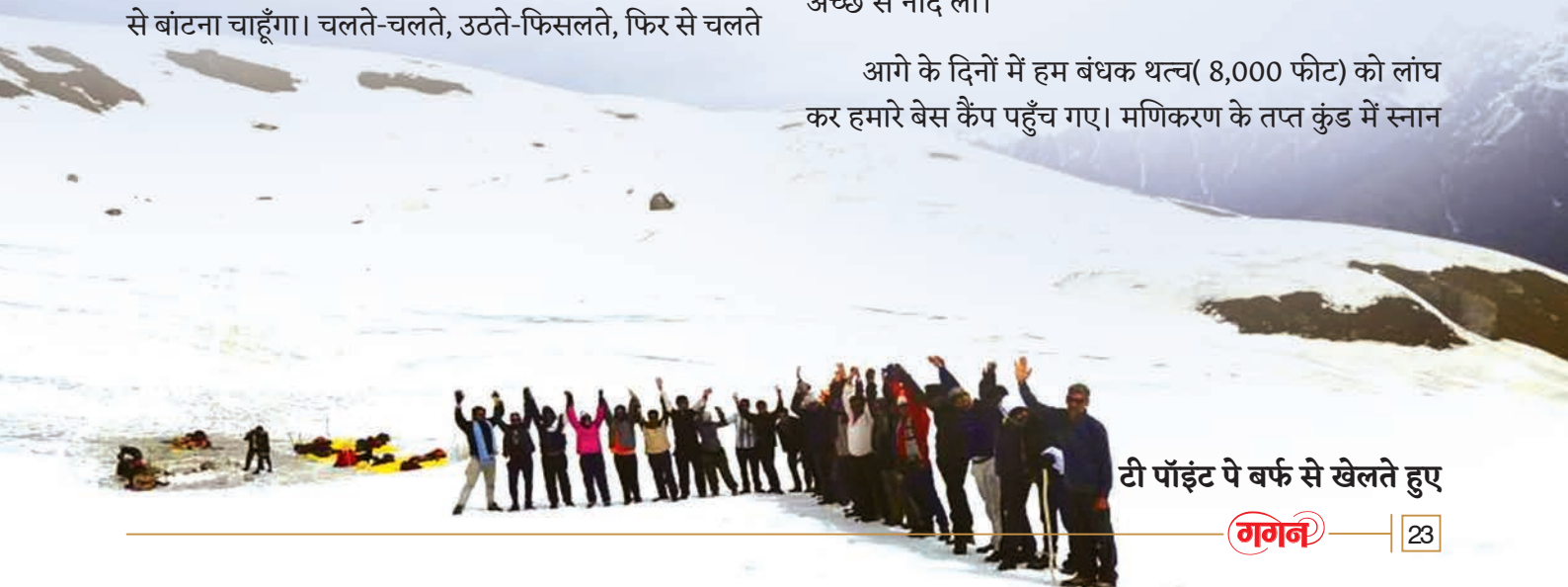
आठवें दिन के सुबह 4.30-5.00 बजे हम सब लोग अगले कैम्प बिसकेरी थत्व के लिए निकल पड़े जो 9 की. मी की दूरी पर है। इस कैम्प तक पहुँचने के लिए सरपास को पार करके जाना था। सरपास 13,800 फीट(4,200मीटर) की ऊँचाई पर है। 8.00-8.30 के बीच हम चाय पॉइंट तक आ गए। यहाँ से रास्ता और भी मुश्किल लगने लगा। जैसे-तैसे करके हम सबने हिम्मत जुटाकर फिर से चलना शुरू किया। आगे का रास्ता और भी कठिन था और चलते वक़्त हम सबको नीचे की खाइयाँ बहुत स्पष्ट रूप से दिख रही थी।

सरपास के पहाड़ तक पहुँचते-पहुँचते काफी सारे लोग फिसल कर नीचे गिर गए थे। कुछ लोगों को चोट भी आई। यहाँ पर मेरे दिल में उस वक़्त क्या खयालात आ रहे थे उनको पाठकों से बांटना चाहूँगा। चलते-चलते, उठते-फिसलते, फिर से चलते

बहुत थक गए थे। मेरा शरीर बिलकुल भी साथ नहीं दे रहा था, लेकिन जाना तो पड़ेगा ही, क्योंकि उस जगह मेरी सहायता कोई और कर नहीं सकता था। एक जगह पर मैं बस बैठ गया और सोचने लगा कि भाई क्या ज़रूरत है इन सब चीज़ों में पड़ने की, अच्छे खासे त्रिवेंद्रम में ज़िंदगी चल रही है, क्यों अपने आप को इतना कष्ट दे रहे हो? लेकिन कुछ देर बाद फिर से एहसास हुआ कि अगर मैं यह कदम नहीं लेता तो, इतनी खूबसूरत वादियों को अपनी ज़िंदगी में कभी नहीं देख पाता, और यहाँ बस रहे लोगों के कष्ट का मुझे एहसास नहीं होता।

फिर मैंने हिम्मत जुटाई और आगे कदम बढ़ाया, एक-एक कदम चलते-चलते मैं सरपास के पास पहुँच गया। सरपास के पास हमने देखा कि एक लंबी-सी रस्सी चोटी से लटक रही है और उसे पकड़ कर हम सब कंधे पर बैग लटकाकर, हाथ के डंडे को कमर में कसकर बांध चढ़ाई शुरू की। यह चोटी करीब 70-80 डिग्री कोण के झुकाव पर थी। इसलिए चढ़ना बहुत मुश्किल लग रहा था, ऊपर से बर्फीली बारिश भी शुरू हो गई थी, जिससे रस्सी भी फिसल रही थी, लेकिन ग्रुप के सब लोगों ने एक दूसरे का साथ दिया और आखिरकार हम सब शिखर पर पहुँच गए। शिखर पर पहुँचकर देखा कि वहाँ तो सिर्फ एक साथ पाँच लोगों के खड़े होने की जगह थी। उस शिखर पर करीब 100-200 मीटर चलने के बाद फिर से 60-80 डिग्री का झुकाव था, जिस पर हम फिसलकर नीचे उतर गए। अब यहाँ से सिर्फ उतरना ही था, कोई चढ़ाई नहीं थी। लेकिन बारिश की वजह से फिर सारा बर्फ जम गया जिससे हम सबको चलने में थोड़ी-सी मुश्किल हुई, लेकिन आखिरकार हम फिसलते हुए, चलकर अगले कैम्प बिसकेरी थत्व (11000 फीट) शाम के 4 बजे तक पहुँच गए। अपने गीले मोज़े, कपड़े और जूते को निकालकर सुखाने के लिए छोड़ दिया। खाना खाकर सबने बड़े अच्छे से नींद ली।

आगे के दिनों में हम बंधक थत्व (8,000 फीट) को लांघ कर हमारे बेस कैम्प पहुँच गए। मणिकरण के तप्त कुंड में स्नान



टी पॉइंट पे बर्फ से खेलते हुए



करके, इतने दिनों के थकान को मिटा दिया। बाद में गुरुद्वारे में माथा टेक कर, मणिकरण के शिव जी का दर्शन कर लिया। रात में कैप फायर हुआ जिसमें सबने अपना-अपना पर्वतारोहण अनुभव सबके साथ बाँटा। फिर से नाच-गाने के साथ हमारी रात रंगीन हो गयी। सभी ने संपर्क में रहने के लिए फेसबुक में अपना ग्रुप भी बना डाला। अगले दिन सारा ग्रुप हमारी यात्रा के मीठे अनुभवों को दिल में लेकर अपने-अपने घर निकल गए। कहानी यही समाप्त हुई लेकिन इस दौरान जो सीख मुझे मिली

वो यहाँ बताता हूँ। “ ज़िंदगी हमेशा सीधी नहीं होती है, कई सारे मुश्किल हालातों से हमें गुज़रना पड़ता है, किसी वक़्त ऐसा लगेगा कि ज़िंदगी थम-सी गयी है और इसके आगे कुछ नहीं है, लेकिन यही वक़्त है जब हमें अपना मनोबल बढ़ाना है और हिम्मत करके आगे बढ़ना है, क्योंकि इस दुनिया में आपके अलावा कोई नहीं जानता कि आपकी मंज़िल क्या है। इसलिए दोस्तों, हम सभी को मुश्किल के हालात में दिल में जोश भर के अपने हौसले को बुलंद करके हमेशा आगे बढ़ते रहना है”।



राष्ट्रप्रेम

कैसा हमारा राष्ट्रप्रेम, जहां हम जागकर भी सो रहे,
सपने आंखों में और इच्छा आसमान में,
बातें बहुत पर दिखता नहीं
काम में, उम्मीद क्यों हमें सिर्फ सरकार से,
आओ हम भी कुछ करें आखिर हम भी हैं
नागरिक इस महान राष्ट्र के...

बचपन से सुनते रहे, देश हमारा महान है,
सभ्यता हमारी सबसे प्राचीन, संस्कृति हमारी सबसे उत्तम,
अपनाया हमने सभी धर्म को, याद रखो इन सभी बातों को,
न सिखलाओ भेद-भाव अपने मन को,
याद रखो हम सब मिलकर ही बना सकते हैं
महान अपने राष्ट्र को...



मालविका सिंह

श्री अमित कुमार सिंह जी की पत्नी

इतिहास पढ़कर है जाना परिचय अपने आप का,
व्यर्थ नहीं हो सकती कुर्बानी हमारे अधिनायक की,
सरहद पर जवान होते रहे शहीद, करके अमर हमारे देश को,
सब रिश्तों में इन्होंने रखा सबसे अक्ल अपने देश को,
सदा याद रखो इन वीरों को जिनकी सोच ने बना दी
महान हमारे राष्ट्र को...

जानकर यह सभी उत्तम सोच, रूह में भर आया जोश,
व्यर्थ न जाने देना इस जोश को दोस्त,
याद रखकर उन सभी महान पुरुषों के अनमोल बोल,
तू ज्ञात कर सभी अच्छे विचार और निकल चल उस राह,
जो बना दे महान हमारे राष्ट्र को...

बारिश का मौसम



अंजली गोयल

श्री पवन कुमार मंगल जी की पत्नी

नाचे मयूर पंख फैलाए,
गाए कोयल मीठा मधुर गान,
टर्-टर् की आवाज़ झिंगुर की,
जो देती बारिश के आने का संदेसा।

गगन में छाई घनघोर घटा,
उमड़-उमड़ गरजे काले बदरा,
झनक-झनक चमके बिजली,
मंद-मंद चले शीतल सुगंध हवा,
आया है बारिश का मौसम सुहाना।

खेत-खलिहानों में लहराती हरियाली,
किसानों के चेहरों पर खिली खुशी,
तन-मन में नई उमंग जगाती,
झमाझम आई बारिश की बौछारें।

घास की चादर पर पानी की बूंदें,
सुहानी सूरज की रोशनी में,
जैसे बिखरे मोती इस धरा पर,
कल-कल बहते झरनों की गूंज,
इंद्रधनुष में छिपी रंग-बिरंगी मुस्कान प्रकृति की,
आया बारिश का मौसम,
लाए मुस्कराहट शुष्क धरा के चेहरे पर।

बचपन की यादों को तरौताज़ा कर,
कागज़ की कश्तियों की इठलाहट पर,
पानी भरे तलैया में झपाक कर,
दोस्तों संग बीते मीठे लम्हें सोचकर,
आया बारिश का मौसम,
संजोए, बिताए बचपन के प्यारे पल।

नदियों तालाबों में नील-चादर चढ़े,
सावन में पिकनिक का मज़ा चले,
भीगे रिमझिम बारिश की बौछारों में,
गरम सूर्यताप से निजात मिले,
आया बारिश का मौसम,
फैलाएं चहु ओर हृदय में ढेरों खुशियाँ।





डॉ. विपिन कुमार यादव
वैज्ञा./इंजीनियर, एसपीएल

टिप: एक अनोखी परंपरा

ऐसा माना जाता है कि टिप शब्द 'टिप्स' (TIPS) से बना है, जिसका मतलब है To Insure Prompt Service अर्थात तत्पर सेवा सुनिश्चित करना। अब इंश्योरेंस तो एडवांस में की जाती है इसलिए जब टिप की परंपरा शुरू हुई तो उसे सेवा लेने से पहले ही दे दिया जाता था, जिससे आप अपने लिए बेहतरीन सेवा सुनिश्चित कर लेते थे। आज भी ऐसे नव रईस दिखाई दे जाते हैं जो किसी महँगे रेस्टोरेंट में घुसते ही दरबान से शुरू करके वेटर तक को पैसे बाँटने लगते हैं!

अब टिप की यह परंपरा बड़ी अनोखी एवं दिलचस्प है, किंतु मेरे हिसाब से अनुचित है। आपने जो सेवा प्राप्त की है उसके निर्धारित मूल्य का आपने भुगतान कर दिया है तो फिर टिप के तौर पर अतिरिक्त भुगतान का क्या मतलब? वैसे टिप का प्रचलन आज कल हर सेवा में है - बाल कटवाओ तो टिप, जूता पॉलिश करवाओ तो टिप, डोरमैन को टिप, वैलेट पार्किंग करने वाले को टिप, जिसने भी कुछ आपके लिए किया हो उसको टिप। फिर भी होटल और खानपान सेवाओं के बिज़नेस में टिप का प्रचलन ज़्यादा है। आजकल सभी अच्छे, बड़े, नामी रेस्टोरेंट बिल में पहले ही 10 से 15 प्रतिशत तक सर्विस चार्ज वसूल कर लेते हैं। फिर भी अधिकतर लोग वेटर को (कई लोग तो स्टीवार्ड को भी!) टिप देते हैं जबकि वे यह जानते हैं कि पहले से वसूला गया सर्विस चार्ज उन्हीं लोगों के लिए था। विडंबना यह है कि यदि आपको वेटर की सर्विस बिलकुल भी पसंद ना आई हो या फिर उसने आपको या आपके ऑर्डर को

अनदेखा किया हो या उसमें देरी की हो तो भी आपको उसे टिप देनी है वरना वो वेटर सोचेगा कि कैसे कंजूस और लीचड़ ग्राहक से वास्ता पड़ गया!

मेरा अपना अनुभव रहा है, जब पिछले वर्ष मैं एक आधिकारिक मीटिंग के लिए बेंगलुरु गया था। अपने एक पुराने सहपाठी (जो एक निजी कंपनी में ऊँचे पद पर था) से मिलने के लिए मेरी एक फ़ाइव स्टार होटल के रेस्टोरेंट में डिनर पर मुलाक़ात तय हुई थी। एक बेहद महँगे डिनर के बाद बिल मैंने ही क्रेडिट कार्ड से दिया एवं अलग से वेटर को सौ रुपए की टिप भी दी जो एक सरकारी कर्मचारी होने के नाते मेरे लिए काफ़ी अधिक थी। रेस्टोरेंट से बाहर आकर मेरा सहपाठी वापस रेस्टोरेंट में गया और वेटर को पाँच सौ रुपए (!!!) और देकर आया। मेरे पूछने पर वह बोला - यार, तू तो यहाँ दोबारा शायद ना आए पर मैं तो अपनी आफ़िशियल मीटिंग के लिए यहाँ आता ही रहता हूँ और ये यहाँ मेरी इमेज का सवाल है!!

आपने शायद कभी नोट किया हो, किसी बड़े होटल के रेस्टोरेंट के डाइनिंग क्षेत्र में सभी टेबल खाली होंगे किंतु वहाँ मौजूद स्टीवार्ड आपसे कहेगा कि सभी टेबल रिज़र्व है और आपको इंतज़ार करने को कहेगा। जैसे ही आप उसे टिप देंगे, सब टेबल खाली हो जाएंगी और वे आपको आदर सहित आपकी मनपसंद टेबल पर बिठा देंगे। टिप के चलन से संबंधित एक प्रसिद्ध चुटकुला है जिसमें एक व्यक्ति अपने मित्र

से कहता है - मैं हमेशा किसी नए रेस्टोरेंट में ड्रिक्स-डिनर के लिए जाता हूँ तो उसका मित्र उत्तर देता है - हाँ यार, मैं भी कभी टिप नहीं देता।

इस टिप के झमेले से संबंधित कुछ बातें निम्नलिखित हैं, जो मैंने कहीं पढ़ी या सुनी है:

1. एक नव-रईस नौजवान अपनी महिला-मित्र के साथ डिनर के लिए एक नामी रेस्टोरेंट में गया। डिनर के बाद उसने रेस्टोरेंट के सारे स्टाफ को टिप्स दी जिसकी कुल राशि थी - साठ हज़ार रुपए!!!
2. बॉलीवुड स्टार अक्षय कुमार व दीपिका पादुकोण ने दिल्ली के एक फ़ाइव स्टार होटल में बारमैन को अलग-अलग पाँच हज़ार रुपए की टिप दी क्योंकि वो उसकी एक खास मोकटेल मिक्स करने की दक्षता से बहुत खुश हुए थे।
3. बॉलीवुड स्टार संजय दत्त दिल्ली के एक फ़ाइव स्टार होटल के दो रूम सर्विस कर्मियों से इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने दोनों को अपनी फ़िल्म 'नॉक-आउट' के प्रीमियर पर अपने विशिष्ट अतिथि के तौर पर आमंत्रित किया।
4. दिल्ली के ही पार्क होटल की कॉफ़ी शॉप में एक एनआरआई महाशय वेटर को टिप में अपनी क्रीमती ओमेगा की कलाई घड़ी दे गए, क्योंकि उसने उन्हें उनकी ज़िंदगी का बेहतरीन बर्गर सर्व किया था।
5. दुबई से आए एक नव-विवाहित जोड़े ने दिल्ली के 'आक्वा' रेस्टोरेंट में वेटिंग स्टाफ़ के लिए छत्तीस हज़ार रुपए की टिप छोड़ी।



6. एक गुटका-किंग ने एक फ़ाइव स्टार होटल में एक विवाह-समारोह आयोजित किया तो उसने होटल के सभी वेटरों को ग्यारह-ग्यारह हज़ार रुपए की टिप दी।

वैसे टिप के मामले में अभिनेता, व्यापारी व एनआरआई ही नहीं बल्कि नेता भी कम नहीं हैं:

1. एक युवा नेता ने एक बड़े होटल के फ़्लोर सर्विस स्टाफ को दस हज़ार रुपए की टिप दी, क्योंकि उसे उनका काम पसंद आया था।
2. एक केंद्रीय मंत्री ने नई दिल्ली के ले-मेरीडियन के वेटिंग स्टाफ को एक लाख रुपए की रक़म टिप के रूप में छोड़ी।
3. अमरीका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने एक बार दो डॉलर की बीयर के लिए बीस डॉलर दिए यानी बिल से नौ गुणा अधिक टिप!!

इस टिप के मामले में अन्य विदेशी हस्तिायें भी पीछे नहीं हैं:

1. न्यूज़ीलैंड के अभिनेता रसेल क्रो ने एक बार एक वेटर को टिप में छह सौ डॉलर दिए व रेस्टोरेंट के सारे स्टाफ के लिए गिटार पर एक गाना भी गाया।
2. हॉलीवुड स्टार जॉनी डेप ने अपने एक चहेते वेटर को एक बार टिप में चार हज़ार डॉलर दे दिए!!
3. हॉलीवुड की अभिनेत्री डू बैरीमोर का टिप के लिए एक निश्चित नियम है - जितने का बिल उतनी ही टिप मतलब 100% टिप!!
4. हॉलीवुड स्टार चार्ली शीन ने एक रेस्टोरेंट में अपनी बेटी का सोलहवाँ जन्मदिन मनाया तो सर्विस में शामिल सभी वेटरों को टिप में अलग से दो-दो सौ डॉलर दिए।
5. इंग्लैंड के फ़ुटबॉल स्टार डेविड बेकम को एक बार 100 डॉलर का बिल दिया गया तो उन्होंने उसमें अपनी तरफ़ से एक शून्य और लगा दिया व बिल चुका दिया। इस प्रकार उन्होंने टिप में वेट्रेस के लिए 900 डॉलर (बिल की राशि से नौ गुणा अधिक) छोड़े!!!
6. ब्रिटेन की सुपर मॉडल नाओमी कैम्पबैल ने अपनी मित्र हॉलीवुड अभिनेत्री कैमरोन डियाज़ के साथ एक बार लंदन के 'विस्की मिस्ट' बार में शंपेन पीने के बाद बिल के साथ-साथ टिप में करीब साढ़े चार लाख रुपए दिए!!!

ऐसा ही नहीं है कि सभी प्रसिद्ध विदेशी हस्तियाँ टिप के मामले में दरिया-दिल हैं। कुछ ऐसे प्रसिद्ध लोग भी हैं जो टिप के मामले में बेहद कंजूस हैं:

1. फ़ेसबुक के खरबपति मालिक, मार्क जुकरबर्ग अपनी पत्नी परिसिला के साथ जब हनीमून के लिए रोम गए थे, तो उन्होंने एक रेस्टोरेंट में टिप के नाम पर कुछ भी नहीं दिया।
2. विश्व प्रसिद्ध अमरीकी गायिका मारिया कैरी, जिनके पास करोड़ों डॉलर की संपत्ति है, रेस्टोरेंट के स्टाफ से सभी सेवाएं लेती हैं, किंतु टिप के नाम पर कभी कुछ नहीं देती।
3. इसी प्रकार गायिका मैडोना भी बेहद अमीर हैं किंतु एक बार उन्होंने भी अपने चार सौ डॉलर के बिल के साथ मात्र 18 डॉलर की टिप छोड़ी।
4. कई बार गोल्फ़ विश्व विजेता रह चुके टाइगर वुड्स जो बेहद धनी (पचास करोड़ डॉलर से अधिक की संपत्ति) हैं, 'ब्लैकजैक' नामक एक केसीनो के खेल के भी शौकीन हैं। ऐसे ही अपने एक केसीनो के राउंड में उन्होंने अपने एक दस हज़ार डॉलर के दाँव को खेलते हुए वेट्रेस को मात्र पाँच डॉलर टिप के रूप में दिए और बाद में वे भी वापस ले लिए, जब उन्हें यह याद आया कि वे उस वेट्रेस को पहले ही टिप दे चुके हैं!
5. करोड़ों डॉलर के मालिक गायक उशर कभी टिप नहीं देते बल्कि टिप के तौर पर अपने ओटोग्राफ़ दे देते हैं।

वैसे टिप के मामले में कुछ अनकहे नियम यह हैं कि न्यूनतम टिप बिल के मूल्य का 10% है जबकि अधिकतम टिप बिल का 25%। टिप से संबंधित कुछ प्रसिद्ध क्रिस्से निम्नलिखित हैं:

1. एक भारतीय महाशय को टिप के मामले में प्रसिद्धि प्राप्त करनी थी, इसलिए एक महंगे रेस्टोरेंट में ड्रिक्स-डिनर के बाद जब बिल आया तो उन्होंने वेटर से पूछा - आज तक तुम्हें सबसे अधिक टिप कितनी मिली है? वेटर ने कहा - आठ हज़ार रुपए। उन महाशय ने वेटर को टिप में दस हज़ार रुपए दिए जिससे वेटर बेहद खुश हो गया। अब उस महाशय ने वेटर से पूछा - अब बताओ, तुम्हें टिप में आठ हज़ार रुपए किसने दिए थे? वेटर ने आदर से उत्तर दिया - सर, आपने ही!!
2. ऐसे ही एक बार भोजन के उपरांत एक करोड़पति ने टिप में

वेटर को पाँच सौ डॉलर (लगभग 37,500 रुपए) दिए। यह देखकर वेटर की आँखें आश्चर्य से फैल गईं। इसके पश्चात करोड़पति ने वेटर से कहा - मुझे ऐसे घूरने की कोई ज़रूरत नहीं है। मुझे पता है कि टिप कम है क्योंकि मुझे तुम्हारी सर्विस बिलकुल पसंद नहीं आई!!!

अब लेख के अंत में एक महापुरुष की महागाथा प्रस्तुत है जो अपने आप में एक मिसाल है। एक अमरीकी करोड़पति जेम्स गॉर्डन बैनेट, मोटे-कालों के रेस्टोरेंट में एक खास ही टेबल पर बैठ कर भोजन करना पसंद करते थे। एक बार जब वे रेस्टोरेंट में पहुँचे तो उन्होंने उस टेबल पर किसी और को बैठा पाया और वह व्यक्ति जेम्स बैनेट के लिए वह टेबल किसी भी हाल में छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। तब मिस्टर बैनेट ने उस रेस्टोरेंट के मालिक को वहाँ बुलवाया तथा उसी समय वह रेस्टोरेंट खरीदने की अपनी इच्छा ज़ाहिर की। उस रेस्टोरेंट की जो कीमत मिस्टर बैनेट ने ऑफ़र की वह इतनी बड़ी थी कि रेस्टोरेंट का मालिक मना ही नहीं कर सका और तत्काल रेस्टोरेंट को बेचने के लिए तैयार हो गया। तब मिस्टर बैनेट ने अपनी पसंदीदा टेबल खाली करवाई और वहाँ बैठकर भोजन किया। इसके बाद जो हुआ उसे देखकर सभी लोग सकते में आ गए। मिस्टर बैनेट ने वह रेस्टोरेंट टिप के तौर पर अपनी सर्विस करने वाले वेटर को दे दिया!!! उस वेटर का नाम सीरो था जिसने अपने नाम पर बाद में उस रेस्टोरेंट का नाम 'सीरोज' रखा जो आगे चलकर एक विश्वप्रसिद्ध रेस्टोरेंट बना।

आपको भी कभी-न-कभी टिप को लेकर किसी झमेले का सामना करना पड़ा ही होगा किंतु मेरे इस लेख को पढ़ने के बाद आपको कुछ राहत अवश्य मिलेगी।



बिहार के प्रसिद्ध मीठे व्यंजन



मयंक कुमार
वैज्ञानिक/इंजीनियर
एयरो

बिहारी खानपान में मीठे व्यंजनों का महत्वपूर्ण स्थान है। इस वर्ष की होली के अवसर पर हमने मालपुआ बनाया था। पर्व होने के नाते जब अपने सहकर्मियों में हमने मालपुआ बाँटा, तो बहुतेरे लोगों को पसंद आया। उन्हें इस व्यंजन के बारे में ज़्यादा पता नहीं था। इस लेख में प्रसिद्ध बिहारी व्यंजनों का वर्णन किया गया है।

1. मालपुआ - तो शुरुआत इसी से की जाए। मालपुआ त्योहारों, विशेषकर, होली के दौरान बनाया जानेवाला व्यंजन है। इसे बनाने की विधि दोशा के बनाने जैसा है। मैदा के अंदर दूध, केला, कद्दूकस किया हुआ नारियल, चीनी, पीसा हुआ सौंफ व पानी मिलाकर एक घोल तैयार कर लें। 15 मिनट के बाद इसमें मध्यम आकार में कटे हुए सूखे मेवे, जैसे काजू, किशमिश, पिस्ता और बादाम मिला दें। फिर इस मिश्रण को घी या रिफाइन्ड ऑयल में तल लें। तले हुए पुआ को चाशनी में कुछ देर डुबो दीजिए, ताकि ये पूरा रस पी सके। मालपुआ को अक्सर रबड़ी या खीर के साथ परोसा जाता है।

2. पीड़िकिया / गुड़िया - यह भी होली में खाए जानेवाले व्यंजनों में से एक है। चीनी, खोया, सूखे मेवे और घी के मिश्रण को सूजी या गेहूँ के आटे की लोईयों में भरा जाता है। फिर इन

लोईयों को विभिन्न प्रकार के विशिष्ट आकार देकर सील कर दिया जाता है, जिसके बाद इन्हें घी में तल लिया जाता है। हवाबंद डब्बे में रखने पर यह कई हफ्तों तक बिना खराब हुए रहते हैं। सुबह के नाश्ते के साथ भी एक पीड़िकिया खाया जाता है।



3. तिलकुट - मकर संक्रांति के दौरान बनाए एवं खाए जानेवाले तिलकुट की बात ही निराली है। इसे बनाने के लिए तिल के दानों को चीनी या गुड़ में मिला कर कूटा जाता है, ताकि ये एक ठोस स्वरूप ले सके। फिर इन्हें सीधे खाया जाता

है। गयाजी का तिलकुट विश्वप्रसिद्ध है। देश-विदेश में इसका निर्यात किया जाता है। जाड़ों/ठंडी के समय तिलकुट खाने से शरीर में गर्मी उत्पन्न होती है, जो ठंड से राहत देती है।



4. लौंगलता – लौंगलता शाम के समय खाया जानेवाला व्यंजन है। इसे रात के भोजन के साथ भी बड़े चाव से खाया जाता है। मैदे की लोइयों में खोया और सूखे मेवे भर इन्हे मोड़कर एक विशेष तरह का आकार दिया जाता है। फिर इनके ऊपरी सतह पर एक साबुत लौंग खोस दिया जाता है। इनको तेल में तलने के बाद चाशनी में डूबोकर परोसते हैं।



5. खाजा – खाजा कुरकुरे व मीठे होते हैं। इनको बनाना सरल है। आटे की रोटियों को पतला-पतला बेलकर इनकी तहों को एक के ऊपर एक चढ़ाया जाता है, जैसा पफ्स (Puffs) में होता है। इनको तेल या घी में तल लेने के बाद इन्हें चाशनी में हल्का-सा डुबा कर निकाल लेते हैं। दूध-खाजा की जोड़ी को अक्सर पूर्णिमा के दिन खाया जाता है।



6. ठेकुआ – पावन छठ पर्व पर सूर्य देव को अर्पण होनेवाले प्रसाद का अभिन्न अंग है ठेकुआ। जैसा कि नाम से प्रतीत होता है, ठेकुआ को हाथों से या लकड़ी के सांचें पर 'ठोक' कर बनाया जाता है। घी में गेहूं के आटे, गुड़ का पानी, खड़ी सौंफ, किशमिश व छुहाड़ों को मिलाकर इनका मिश्रण तैयार कर लें। फिर जैसा संभव हो, हाथों से या लकड़ी के सांचें में इस मिश्रण को ठोक कर इनको घी में छाना जाता है। छठ पर्व के दूसरे दिन सूर्य देव को अर्घ्य देने के बाद ही इसे ग्रहण करते हैं। चूंकि यह लंबे समय तक बिना खराब हुए रहता है, अतः इसे हफ्तों तक खाया जा सकता है। हमारे एक सहकर्मी के अनुसार यह प्लम केक जैसा स्वाद देता है।

ऊपरलिखित लेखक की पसंदीदा छह व्यंजन है। सुधी पाठकों से आशा है कि वे इन व्यंजनों को बनाकर, स्वयं व परिवार को आह्लादित करेंगे।



इंटरनेट ऑफ थिंग्स : एक उभरता तकनीक



पवन कुमार मंगल
वैज्ञानिक/इंजीनियर, सीएसओजी

इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), वास्तव में एक बहुत ही सरल अवधारणा है, इसका अर्थ है दुनिया की सभी चीजों को लेना और उन्हें इंटरनेट से जोड़ना। अब तक अधिकतर कंप्यूटर या मोबाइल फोन ही इंटरनेट से जुड़े थे, लेकिन IoT के तहत, सभी भौतिक वस्तुएं इंटरनेट से जुड़ सकती हैं।

जब कोई चीज़ इंटरनेट से जुड़ी होती है, तो इसका मतलब है कि वह सूचना भेज सकती है या जानकारी प्राप्त कर सकती है, या दोनों। जानकारी भेजने और/या प्राप्त करने की यह क्षमता चीजों को स्मार्ट बनाती है और स्मार्ट अच्छा है।

IoT के कई अनुप्रयोग हैं:-

- जुड़े उपकरण (Connected Devices)
- स्मार्ट होम सिस्टम
- स्वायत्त कृषि उपकरण
- पहनने योग्य स्वास्थ्य मॉनिटर
- स्मार्ट फैक्ट्री उपकरण
- वायरलेस इन्वेंट्री ट्रैकिंग
- अल्ट्रा-हाई स्पीड वायरलेस इंटरनेट
- बायोमेट्रिक साइबर सुरक्षा स्कैनर
- शिपिंग कंटेनर और रसद ट्रैकिंग

कंप्यूटर विज्ञान एवं संबंधित प्रौद्योगिकी भरी आधुनिकता के इस युग में इंटरनेट, संचार एवं संगणना आधारित स्वचालित तकनीक ने काफ़ी उन्नति की है इन्हीं में से एक “इंटरनेट ऑफ़

थिंग्स (IoT)” तकनीक इंटरनेट नेटवर्क सेवा पर आधारित दूरस्थ डेटा स्थानांतरण एवं क्रियान्वित प्रणाली आज एक उभरती प्रौद्योगिकी है।

इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स नेटवर्किंग तकनीक पर आधारित एक ऐसी संकल्पना है जहां चीज़ें या वस्तुएं एक दूसरे से बातें करें या कहे कि आपस में डेटा संचारित कर सकें तथा दूसरे उपकरणों के साथ मिलाप कर सकें। इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स भौतिक वस्तुएं, जो कि संवेदक यंत्र, सॉफ्टवेयर एवं अन्य प्रौद्योगिकियों या हार्डवेयर का अंतर्निहित रूप है, को आपस में संबंधित करने तथा डेटा एवं सूचनाओं के दूसरे उपकरणों से आदान-प्रदान को वर्णित करती है। उपकरणों का यह समूह सामान्यतया इंटरनेट नेटवर्क द्वारा जुड़ा होता है तथा इंटरनेट नेटवर्क को सर्वव्यापी संवेदकों के माध्यम से भौतिक दुनिया से जोड़ा जा सकता है।

इस तकनीक का नामकरण सन् 1999 में ब्रिटिश प्रौद्योगिकी अग्रणी केविन अश्टोन द्वारा किया गया, हालांकि यह तकनीक दूसरे रूप में सन् 1970 के आसपास से ही प्रचलित था।

इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स की कार्यप्रणाली

सामान्यतया वेब आधारित सक्षम बुद्धिमत्ता उपकरण जैसे सेंसर, प्रसंस्करण प्रणाली, हार्डवेयर तथा बेतार तकनीकी माध्यम संचार उपकरणों द्वारा संबंधित विशेष वातावरण या भौतिक प्राचलों को संग्रहित कर दूरस्थ प्रणाली को स्थानांतरित कर तथा डेटा विश्लेषण के आधार पर प्रतिक्रिया स्वरूप कार्य

निष्पादन द्वारा अपनी कार्यप्रणाली को पूरा करते हैं। यह डेटा नेटवर्किंग आधारित क्लाउड कंप्यूटिंग डेटा संचयन या स्थानीय स्तर सर्वर पर डेटा को प्रसंस्करित व विश्लेषित कर प्रतिक्रिया का क्रियान्वयन किया जाता है। मशीन तकनीक अथवा कंप्यूटर प्रोग्रामिंग की मदद से बिना मानव हस्तक्षेप के पूरी प्रक्रिया को स्वचालित किया जा सकता है। यद्यपि तकनीशियन उपकरणों के साथ बातचीत कर सकता है जैसे संबंधित विशेष अनुदेश देना, संग्रहित डेटा तक पहुंच इत्यादि। उपकरणों को किसी भी स्थान से नियंत्रित किया जा सकता है तथा इंटरनेट/नेटवर्क संयोजकता की उपलब्धता इसके लिए आवश्यक है।

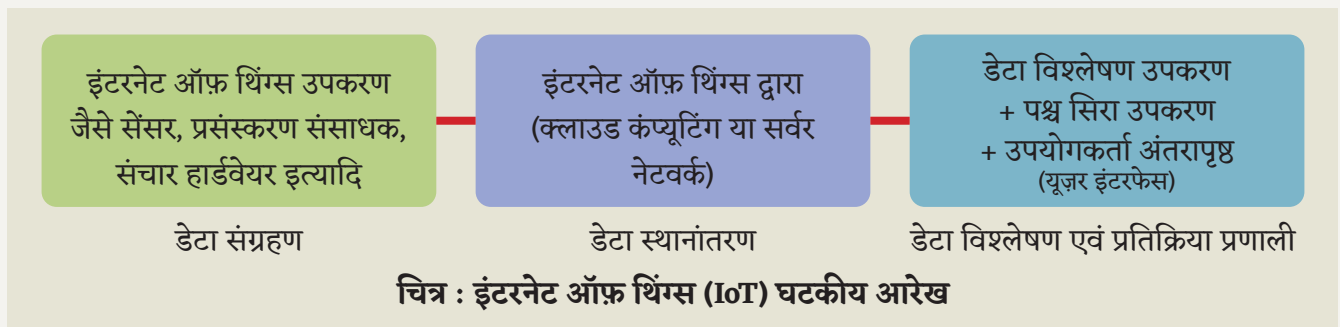
इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स के निम्नलिखित मुख्य घटके हैं:-

- संवेदक / सेंसर
- संयोजकता
- डेटा प्रसंस्करण एवं विश्लेषण
- उपयोगकर्ता अंतरापृष्ठ

- इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों एवं नेटवर्क माध्यमों के उपयोग से संचार में तीव्रता एवं सुगमता

इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स तकनीक की हानियाँ निम्न प्रकार हैं :-

- हैकर्स द्वारा नेटवर्क से गोपनीय सूचनाओं को चुराना एवं सामूहिक उपकरण तंत्र को बेकार कर देना।
- अत्यधिक सेंसरों के कारण डेटा स्थानांतरण संबंधित परेशानियाँ एवं उपकरणों की प्रक्रमण क्षमता पर असर।
- किसी प्रणाली में समस्या सभी अन्य समाकलित प्रणालियों के लिए एक परेशानी बन सकती है या पूरी समाकलित प्रणाली को ध्वस्त कर सकती है।
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस क्षेत्र में मानकों की कमी के कारण विभिन्न उत्पादकों के उपकरणों का आपसी तालमेल मिलन एवं अंतः संचार में कठिनता।



इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स के लाभ व हानियाँ

वर्तमान में इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स तकनीक ने मानव-जीवन को दूरस्थ नियंत्रित एवं स्वचालित घरेलू उपकरणों द्वारा बहुत-ही सरल बना दिया है तथा उद्योग व व्यापार परिचालन की विभिन्न प्रक्रियाओं की रिमोट निगरानी भी सुगम बन गई है, जिससे समय व पैसे की बचत तथा उत्पादकता में वृद्धि हुई है। किसानों की सहायता सेंसरों के माध्यम से वृष्टि डेटा, आर्द्रता, तापमान एवं मृदा कणों की जांच इस माध्यम द्वारा दूर से ही की जा सकती है।

इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स तकनीक के लाभ निम्न प्रकार हैं :-

- सूचनाओं का परस्पर अभिगमन (किसी भी स्थान व समय तथा उपकरणों पर आधारित)
- नेटवर्क माध्यम से सभी सेंसर डेटा के स्थानांतरण द्वारा समय एवं वित्तीय बचत
- स्वचालन द्वारा व्यापार की गुणवत्ता में वृद्धि

सामान्यतया आम जीवन में इस तकनीक का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में देखा जा सकता है जैसे अमेज़न द्वारा निर्मित अमेज़न वेब सर्विसेज आइओटी (AWS IoT) इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स के लिए एक क्लाउड प्लेटफ़ॉर्म प्रदान करता है। विभिन्न संस्थाओं/कंपनियों द्वारा विकसित आईओटी मानक एवं उनकी रूपरेखीय प्रौद्योगिकी, जैसे IPv6, ZigBee, डेटा वितरण प्रणाली, लंबी दूरी बृहत क्षेत्र नेटवर्क (LoRaWAN) इत्यादि का उपयोग इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स तकनीक में होता है।

अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स का उपयोग डेटा स्थानांतरण, प्रसंस्करण एवं विश्लेषण तथा दूरस्थ स्वचालित नियंत्रण अभिक्रियाओं में सहायक हो सकता है परंतु बाहरी नेटवर्क इस्तेमाल की वजह से डेटा एवं सूचना सुरक्षा एक बड़ी चुनौती है। भविष्य में प्रमोचन यान जांच- पड़ताल प्रणालियों एवं अन्य दूरस्थ परस्पर डेटा अभिगमन अनुप्रयोग प्रणालियों के सतत् विकास में इसका बड़ा योगदान हो सकता है।

संदर्भ सूची : [1] विकिपीडिया तथा अन्य तकनीकी वेबसाइट

भारतवर्ष

अखंड हूँ, प्रचंड हूँ
विशाल हूँ, विख्यात हूँ
हिमालय का हिम हूँ
बहती गंगा की धुन हूँ

अनंत हूँ, उत्कृष्ट हूँ
अखंड हूँ, प्रचंड हूँ
मुनियों की धरित्री हूँ
नानक की मही हूँ

भिन्न हूँ, विभिन्न हूँ
अखंड हूँ, प्रचंड हूँ
पूजता सूर्योदय हूँ
पूजता सूर्यास्त हूँ

ज्ञानी हूँ, योगी हूँ
अखंड हूँ, प्रचंड हूँ
होली का रंग हूँ
लोहड़ी का गीत हूँ

अद्वितीय हूँ, अकल्पनीय हूँ
अखंड हूँ, प्रचंड हूँ
मृदु हृदय मानव हूँ
राक्षसी नाशी हूँ

पवित्र हूँ, धाम हूँ
अखंड हूँ, प्रचंड हूँ
अनी का त्याग हूँ
हरि का वास हूँ

अर्थ हूँ, अथर्व हूँ
अखंड हूँ, प्रचंड हूँ
संतों की जीवात्मा हूँ
सूफ़ियों का संवाद हूँ

महत हूँ, प्रगतिशील हूँ
अखंड हूँ, प्रचंड हूँ
बुद्ध का बोध हूँ
स्वामी का आत्मविश्वास हूँ

अखंड हूँ, प्रचंड हूँ
विशाल हूँ, विख्यात हूँ
...हाँ मैं ही तो भारतवर्ष हूँ...



जैद अहमद
वैज्ञा./इंजीनियर
क्यूसीडी



1. संचार उपग्रह किस प्रकार की कक्षाओं में रखे जाते हैं?
2. कार्टोसैट-1 का प्रयोग हम किस उपयोग के लिए करते हैं?
3. वर्ष 1964 के टोकियो ओलंपिक खेलों के सीधे प्रसारण हेतु किस अमरीकी उपग्रह का उपयोग किया गया था?
4. उस प्रमोचन यान का नाम बताएं, जिसने परवर्ती कक्षीय उड़ानों के लिए पहली बार द्रव नोदक चरण का पुनरुपयोग किया?
5. सोवियत संघ या संयुक्त राज्य अमरीका के अलावा किसी अन्य देश के पहले अंतरिक्षयात्री का नाम बताएं।
6. प्रथम भारतीय प्रयोगात्मक अभियान कौन-सा था जिसने वायुमंडलीय पुनःप्रवेश की राष्ट्र की क्षमता का प्रदर्शन किया?
7. सर्वाधिक दूरी तक जानेवाले मानवनिर्मित उपग्रह का नाम बताइए।
8. हबल स्थिरांक से संबंधित है।
9. डीटीएच सेवाओं का प्रचालन.....में किया जाता है।
10. निजी रूप से वित्तपोषित स्पेसशिप वन को 21 जून, 2004 को उसकी प्रथम उड़ान में अंतरिक्ष कोर पार करते हुए किसने उड़ाया था?



बीजू चंद्रन
वैज्ञा./इंजीनियर, ओएईडी



उत्तर:

1. भू-स्थिर कक्षाएं
2. सुदूर संवेदन
3. सिन्कोम-3
4. फाल्कन-9
5. व्लाडिमिर रेमेक (चेकोस्लोवाकिया)
6. अंतरिक्ष कैस्पूल पुनःप्राप्ति प्रयोग (एसआरई)
7. वोएजर
8. ब्रह्मोड के विस्तार
9. केयु बैंड
10. माइकेल मेलविल

अप्रैल- सितंबर, 2021 के दौरान वीएसएससी एवं एपीईपी में आयोजित विविध हिंदी कार्यक्रम

विविध कार्यशालाएं

वीएसएससी

सहायकों के लिए

कोविड महामारी के चलते अप्रैल-जून तिमाही में निर्धारित कार्यशाला का आयोजन नहीं किया जा सका। इस कार्यशाला का आयोजन दिनांक 25.08.2021 को केंद्र के प्रशासन, लेखा तथा क्रय एवं भंडार क्षेत्र के सहायकों, वरि. परियोजना सहायकों तथा कार्यालय लिपिकों के लिए किया गया, जिसमें 18 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन श्री अनिल कुमार बी, वरि. प्रधान, पीजीए द्वारा किया गया। उन्होंने केंद्र में राजभाषा संबंधी कार्यान्वयन पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की तथा सभी प्रतिभागियों से कहा कि अपने कार्यालयीन कार्य को हिंदी में करने में आप सभी अपना थोड़ा बहुत योगदान अवश्य दें। दो सत्रों में आयोजित कार्यशाला के पहले सत्र का संचालन आइआइएसयू के सहायक निदेशक (रा.भा) श्रीमती आर महेश्वरी अम्मा द्वारा किया गया। आपने प्रशासनिक क्षेत्रों में प्रयोग में आनेवाले वाक्यों एवं शब्दावली का राजभाषा में प्रयोग हेतु अभ्यास, राजभाषा नियम सार आदि से संबंधित विषयों में सत्र संचालन किया। गूगल मीट के ज़रिए दूसरे सत्र का संचालन डॉ. राधिकादेवी डी, सहायक निदेशक (रा.भा), राजभाषा विभाग, कोच्ची द्वारा सामान्य हिंदी व्याकरण विषय पर किया गया। सत्र काफी लाभप्रद रहा तथा सभी प्रतिभागियों ने अपनी संतुष्टि व्यक्त की।



अधिकारियों के लिए

केंद्र के प्रशासनिक क्षेत्र में कार्यरत अधिकारियों के लिए एक अर्ध दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 23.09.2021 को किया गया, जिसमें 15 अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन केंद्र के वरि. प्रधान, पीजीए, श्री अनिल कुमार बी द्वारा किया गया। उन्होंने सबसे पहले केंद्र की गृह पत्रिका 'गगन' को राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा विभाग द्वारा प्रदत्त कीर्ति पुरस्कार की श्रेणी में 'ग 'ग' क्षेत्र के अधीन द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करने की खुश-खबरी सभी प्रतिभागियों को दी तथा कहा कि अब एक नया मानदंड तय हो चुका है, अब अब्बल आने हेतु केंद्र का प्रयास और ज़ोरो-शोरों से होगा। इसके लिए प्रशासनिक क्षेत्र से कुछ लेखों का योगदान ज़रूर किया जाए। उन्होंने आगे कहा कि केंद्र में ऐसी कार्यशालाओं का आयोजन बहुत लाभदायक होता है, जिससे कि आप राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में अपना योगदान दे सकते हैं। इसीलिए सभी ऐसी कार्यशालाओं का भरपूर लाभ उठाएं। कक्षा संचालन श्री एम जी सोम शेखरन नायर, उप निदेशक (रा.भा.), वीएसएससी द्वारा किया गया। उन्होंने राजभाषा नीति के मुख्य बिंदुओं तथा प्रशासनिक शब्दावली से संबंधित प्रयोगों तथा उसके प्रशासनिक वाक्यों में प्रयोग का अभ्यास आदि करवाया। अंत में सभी प्रतिभागियों ने कार्यशाला के सफल आयोजन व इसकी प्रशिक्षण सामग्री पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की।



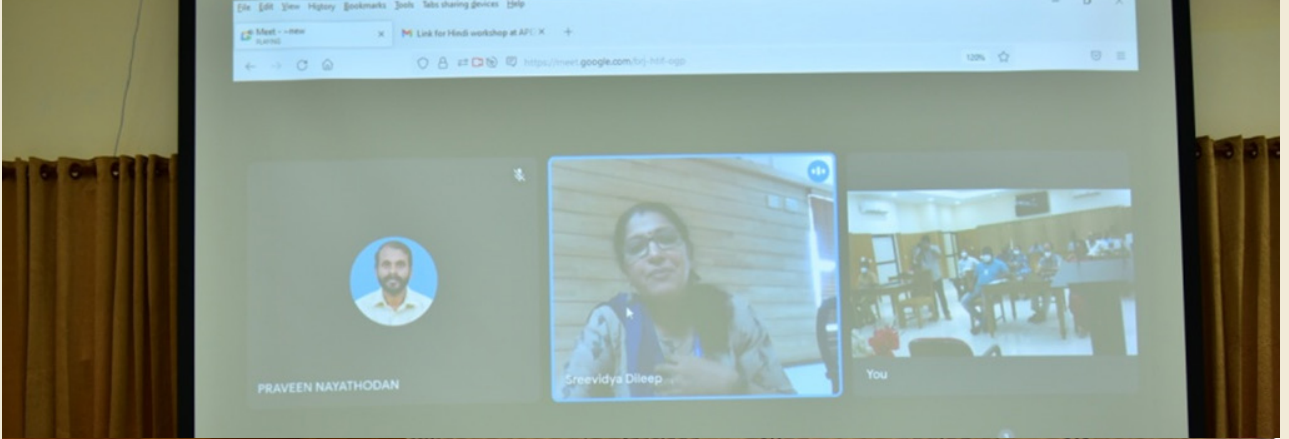
प्रशासनिक क्षेत्रों के कर्मचारियों के लिए

एपीईपी के प्रशासनिक क्षेत्रों के कर्मचारियों के लिए दिनांक 29.06.2021 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्रीमती धीला सी.जी., प्रशासन अधिकारी, एपीईपी ने कार्यशाला का उद्घाटन किया और यह कार्यशाला 3 सत्रों में आयोजित की गई। प्रथम 2 सत्रों का संचालन डॉ. राधिका देवी, सहायक निदेशक (रा.भा.), हिंदी शिक्षण योजना द्वारा किया गया और तीसरे सत्र का संचालन श्रीमती नीतु पी टी, कनि. अनुवाद अधिकारी, एपीईपी द्वारा किया गया। कार्यशाला ऑन-लाइन विधा द्वारा आयोजित की गई जिसमें कार्यालय से 10 और घर से 6 कर्मचारी भाग लिए। प्रशिक्षण के अंतर्गत शामिल प्रमुख बातें राजभाषा नीति और नियम, वार्षिक कार्यक्रम 2021-22 और नेमी टिप्पणियां आदि थी। श्री कृष्णमूर्ति एस, वरि. फार्मिसिस्ट, एपीईपी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला समाप्त हुई।



प्रशासनिक व तकनीकी क्षेत्रों के कर्मचारियों के लिए

एपीईपी के प्रशासनिक व तकनीकी क्षेत्रों के कर्मचारियों के लिए दिनांक 29.09.2021 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला 3 सत्रों में आयोजित की गई। प्रथम 2 सत्रों का संचालन श्रीमती श्रीविद्या एम, वरि. हिंदी अनुवादक, रबड बोर्ड-मुख्य कार्यालय, कोट्टयम द्वारा किया गया और तीसरे सत्र का संचालन श्रीमती नीतु पी टी, कनि. अनुवाद अधिकारी, एपीईपी द्वारा किया गया। कार्यशाला ऑन-लाइन विधा द्वारा आयोजित की गई जिसमें कार्यालय से 18 और घर से 1 कर्मचारी भाग लिए। राजभाषा नीति और नियम तथा आधारभूत हिंदी व्याकरण कार्यशाला के प्रमुख विषय रहें। साथ ही दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी प्रयोग को बढ़ाने के उपायों को भी परिचित कराया गया। श्री टोपसन ए जे, वरि. तकनीशियन, एपीईपी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला समाप्त हुई।



वीएसएससी में हिंदी माह समारोह

इस वर्ष केंद्र में हिंदी माह समारोह दिनांक 06.09.2021 से 05.10.2021 तक निर्धारित है। हिंदी माह समारोह के आयोजन के सिलसिले में राजभाषा विभाग से प्राप्त आदेश के अनुरूप संविधान द्वारा दिए गए दायित्वों के निर्वहन के लिए केंद्र में दिनांक 14.09.2021 को एक राजभाषा प्रतिज्ञा प्रत्येक प्रभाग/अनुभाग में कर्मचारियों द्वारा लिया गया तथा विगत वर्ष की भांति हिंदी के प्रसिद्ध विद्वानों की सूक्तियों का प्रदर्शन हिंदी माह के दौरान प्रत्येक दिन इंटरनेट में 15 दिनों तक प्रदर्शित किया गया। ज़्यादातर प्रतियोगिताएं डिजिटल माध्यम से चलाई गईं। हिंदी भाषी, हिंदीतर भाषी एवं उनके विवाहितियों के लिए भी अलग-अलग प्रतियोगिताएं चलाई गईं। हिंदी भाषियों के लिए निबंध लेखन, कहानी लेखन तथा हिंदी एकल गायन प्रतियोगिता तथा हिंदीतर भाषी कर्मचारियों के लिए श्रुतलेखन, प्रशासनिक शब्दावली, अनुवाद, निबंध लेखन, कवितापाठ, तस्वीर क्या बोलती है, हिंदी एकल गायन, हिंदी टंकण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। चालकों के लिए समाचार पाठन, ग्रुप 'डी' से 'सी' में उन्नयन प्राप्त कर्मचारियों के लिए सुलेखन प्रतियोगिता तथा हिंदी भाषी तथा हिंदीतर भाषी कर्मचारियों के विवाहितियों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रत्येक प्रतियोगिता में काफी तादाद में प्रतिभागियों ने भाग लिया।

हिंदी माह के दौरान अधिकतम कार्य हिंदी में करने हेतु लागू प्रोत्साहन योजना पर भी प्रतियोगिता चलाई गई तथा दसवीं तथा बारहवीं कक्षा में हिंदी में अधिकतम अंक प्राप्त बच्चों के लिए लागू पुरस्कार योजना भी हर वर्ष की तरह इस बार भी चलाई गई।



एपीईपी में हिंदी सप्ताह समारोह 2021

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन एवं कार्यालयों में हिंदी में किए जा रहे कार्य की मात्रा को बढ़ाने तथा कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से एपीईपी में सितंबर 12, 2021 से सितंबर 18, 2021 तक हिंदी सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कर्मचारियों के लिए डिजिटल विधा में निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं -

- हिंदी कवितापाठ
- हिंदी एकल गीत प्रतियोगिता
- हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता

इन प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग और प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हिंदी माह के दौरान कर्मचारियों के लिए विशेष प्रोत्साहन योजना आयोजित की गई जिसमें हिंदी माह के दौरान मूल काम हिंदी में करनेवाले कर्मचारियों को कार्य की मात्रा एवं गुणवत्ता के आधार पर पुरस्कृत किया गया।

हिंदी सप्ताह सामारोह में कर्मचारियों के परिवार को भी शामिल करने के उद्देश्य से विवाहितियों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता और 10 वीं तथा 12 वीं कक्षाओं की परीक्षाओं में हिंदी में अधिकतम अंक प्राप्त करनेवाले कर्मचारियों के बच्चों के लिए पुरस्कार योजना को भी कार्यान्वित किया गया।

वेबसाइट का द्विभाषीकरण

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में लिए गए निर्णयानुसार केंद्र के सभी एन्टिटी/परियोजना के होम पेज का अनुवाद पहले पूरा किया गया है। अगले चरण के रूप में इनके आंतरिक पृष्ठों का अनुवाद कार्य शुरू किया जा चुका है। साथ-ही प्रशासन तथा सहायक प्रभागों के वेब सामग्री के हिंदी अनुवाद का कार्य भी हाथ में लिया गया है।

जीवन की कीमत

अस्पतालों की हालत देखकर,
मेरी काया बिलख के रो रही,
जीवन की आखिरी साँस भी अब,
ऑक्सीजन सिलेंडर पर ही सो रही।

आदमी भी आदमी से दूर भाग रहा,
रिश्तों को अच्छी तरह निभा रहा,
मानो प्रकृति भी यही सिखा रही,
जीवन कैसे जीना है बतला रही।

इस महामारी में कई अपने,
अपनों को छोड़ कर चले गए,
बेहतर जीवन की चाह में,
हमेशा-हमेशा के लिए सो गए।

मनुष्य अपनी गलतियों से,
अभी भी नहीं सीख रहा,
इस कठोर वक्त में भी,
मुर्दों पर खूब पैसे ऐंठ रहा।

यह बुरा समय है गुज़र जाएगा,
बचा संकट भी परे ही जाएगा,
देते रहना एक-दूसरे का साथ,
जीवन का नया सवेरा फिर लौट आएगा।



पूरन सिंह
वैज्ञानिक/इंजीनियर
आरपीपी

मूल काम हिंदी में करने हेतु पुरस्कार योजना

कार्यालयीन कार्य मूल रूप से हिंदी में करने हेतु पुरस्कार योजना के अधीन वर्ष 2020-21 के लिए निम्नलिखित कर्मचारियों को नकद पुरस्कार दिए गए



सहीर एस
सहायक, एसटीएस
विशेष पुरस्कार I



मनोज सी
वरि. सहा., स्थापना
विशेष पुरस्कार II



रंजिनी राज वी
वरि. सहा., स्थापना
प्रथम



मंजु एम
वैय. सहा., ईएफए/एमएमई
प्रथम



चंद्रबाबु एस
वरि. सहा., स्थापना
प्रथम



उषा के
वरि. सहा., स्थापना
प्रथम



सनिता एस एफ
वरि. सहा., एलवीएएफ
प्रथम



श्रीप्रिया के जे
वरि. सहा., स्थापना
प्रथम



वनजा अजितन
वरि. परि. सहा., स्थापना
प्रथम



अनु मत्ताई
वरि. सहा., सीएचएसएस
प्रथम



सुजा एस जोण
वरि. परि. सहा., स्थापना
प्रथम



दीपक पी
वरि. सहा., स्थापना
प्रथम



दीपारानी वी एम
वैय. सहा., पीसीएम
प्रथम



सुजा जे नायर
वैय. सचिव, सीएमडी-इले
प्रथम



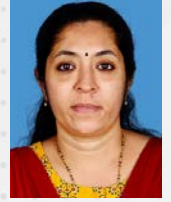
शालिनी आर
वैय. सहा., एमएमई
प्रथम



मुहम्मद हुसैन एस
वरि. सहा., एवीएन-भंडार
प्रथम



नीना एस
वरि. सहा., एमवीआइटी
प्रथम



सुमा एल
वरि. सहा., एमवीआइटी प्रशा.
प्रथम



जिषा जयन एस
वरि. सहा., एमवीआइटी प्रशा.
प्रथम



फेबिना बशीर
सहायक, एमएमई भंडार
प्रथम



रेश्मा रेबा एल
वैय. सहा., एमएमई
प्रथम



सामसन फर्नांडीस ए
वरि. सहा., स्थापना
प्रथम



बिनीप के के
वरि. सहा., स्थापना
द्वितीय



मिथुन यू एम
वरि. सहा., स्थापना
द्वितीय



अखिला चंद्रन आर पी
वरि. सहा., एमवीआइटी प्रशा.
द्वितीय



शरत कुमार एम
वरि. सहा., स्थापना
द्वितीय



अश्वती एस नायर
वैय. सहा., कार्मिक
द्वितीय



स्मिता रंगनाथ
परि. वैय. सचिव, एसओई
द्वितीय



शोली पी आर
वैय. सहा., सीईएसजी
द्वितीय



षिजु एस पी
वरि. सहा., स्थापना
द्वितीय



प्रसीदा एस
परि. वैय. सचिव, एवीएन
द्वितीय



मंजु आर
परि. वैय. सचिव, पीएसीसी
द्वितीय



सौम्या के एस
वैय. सहा., आरपीपी
द्वितीय



विनीता एस
वरि. सहा., स्थापना
द्वितीय



जयमोल जोस
वरि. सहा., स्थापना
द्वितीय



काव्या के वी
वरि. सहा., स्थापना
द्वितीय



स्मिता वी एस
वैय. सहा., एमएसए
द्वितीय



जिषा सूसन तोमस
वरि. सहा., एमएसए
द्वितीय



मिन्नु मरिया जोसफ
वरि. सहा., एमएमई-भंडार
द्वितीय



विनोद कुमार पी
सहायक, एवीएन-भंडार
द्वितीय



मुजीब एस
वरि. सहा., स्थापना
द्वितीय



अखिला पी एस
वरि. सहा., सीएमजी
द्वितीय



ओमप्रकाश साहू
सहायक, एफसीजी
द्वितीय



भागीरथी एस
वैय. सचिव, पीजीए
द्वितीय



दिव्या जी यू
वरि. सहा., स्थापना
द्वितीय



राजलक्ष्मी जी एस
वरि. सहा., वीजीएस
द्वितीय



राजी बी
वैय. सहा., एएसओई
द्वितीय



रश्मी जे आर
परि. वैय. सचिव, एचटीडीजी
द्वितीय



लक्ष्मी एस एस
वैय. सहा., आरएमपीएफ
द्वितीय



प्रीति वी वी
वैय. सहा., क्यूडीटीटी
द्वितीय



गिरन सी
वरि. सहा., कार्मिक
द्वितीय



सेलिन वी
वैय. सहा., एमएमई
द्वितीय



सतीश के ए
वरि. सहा., कार्मिक
तृतीय



अनचा आर नायर
सहायक, वीजीएस
तृतीय



रेजीशमा आर जे
वैय. सहा., टीवीपी
प्रोत्साहन



धन्या वर्गीस
वैय. सचिव, एएसओई
प्रोत्साहन



राधिका कृष्णन के
वैय. सहा., एमएमई
प्रोत्साहन



विनेश एम वी
एलवीडी-ए, टीओएमडी
प्रथम

भाषाओं का खेल

हम जानते हैं कि हिंदी तथा मलयालम उत्तर और दक्षिण की अपनी भाषाएं हैं। उनमें उत्पत्ति से लेकर कई प्रकार की भिन्नताएं हैं। फिर भी, संस्कृत के प्रभाव के कारण दोनों में बहुत समानताएं भी हम देख सकते हैं। कभी-कभी ये समानताएं रूप और उच्चारण तक सीमित होती हैं तो कभी ऐसे भी शब्द मिलते हैं जो रूप एवं उच्चारण में ही नहीं, बल्कि अर्थ में भी समान होते हैं।

मैं यहां ऐसी कुछ घटनाएं याद कर रही हूँ जिनमें हिंदी व मलयालम के रूप और उच्चारण में समान, लेकिन अर्थ में भिन्न शब्दों का खेल नज़र आता है।

मेरे बचपन के दिनों में टी वी पर रामायण और महाभारत धारावाहिक चलते थे। ये काफी लोकप्रिय भी होते थे। भाषा न जाननेवाले व्यक्ति भी आधारभूत कहानी की समझ से इनका आनंद उठा पाते थे। पुराणों की कहानियां होने के कारण इनके पात्र संस्कृत-निष्ठ भाषा का प्रयोग किया करते थे। बीच-बीच में बुजुर्ग पात्र अपने पुत्र-पौत्रों को आशीर्वाद देते हुए दिखाई देते थे। उनका आशीष सुनकर बहुत मलयाली लोग उस समय अचंभे में पड़ जाते, क्योंकि वे कहते “पुत्र, तुम्हारा कल्याण हो।” हिंदी में कल्याण शब्द का अर्थ Welfare है तो मलयालम में कल्याणम शब्द शादी का अर्थ देता है। आप ही सोचिए कि उस वक्त एक आम मलयाली, जिसने हिंदी की दुनिया में नया-नया कदम रखा है, इसका क्या अर्थ समझा होगा।

दूसरी घटना आजकल के सोशल मीडिया से जुड़ी हुई है। एक मलयाली ने अपने हिंदी भाषी सहकर्मी से बातों-बातों में कहा कि उसने अपना इन्स्टाग्राम खाता अभी-अभी खोला है। वे बोले –“मेरे अकाउंट का डीपी मेरी माता का चित्र है।” हिंदी में कहे गए इस पूरे वाक्य से उसके सहकर्मी ने यह समझा कि वह डीपी उसकी माताजी का तस्वीर है, जबकि मेरी माता से मलयाली का मतलब था येशुदेव की माता, जिनका नाम मेरी है।

इसी तरह एक और घटना किसी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के दौरान हुई थी। हिंदी में प्रश्न था कि केरल का राष्ट्रीय पशु कौन-सा है? उत्तर में किसी मलयाली ने केरल के एक बुजुर्ग राजनीतिज्ञ का नाम लिखा। उन्होंने राष्ट्रीय शब्द को मलयालम का राष्ट्रीयम समझकर ऐसा किया था, जिसका अर्थ राजनीति है। दो सुंदर भाषाएं एक-दूसरे से मिलने से उत्पन्न होनेवाली विशिष्ट परिस्थितियों से जन्मी ये तीनों घटनाएं मात्र मनोरंजन हेतु आपसे साझा किया गया है।



लक्ष्मी जी
वरि. अनुवाद अधिकारी

शब्दों का खेल

भाषा शब्दों का खेल है और इस खेल में दो शब्द अलग-अलग रहकर कुछ अर्थ देते हैं तो कभी-कभी वे मिलकर अपने अर्थों से बिलकुल अलग कुछ तीसरा भाव प्रदान करते हैं। चलिए, उदाहरण से समझाते हैं-

- हाथ = Hand. पीला करना = Make it yellow colored.** लेकिन, अगर कोई हिंदी भाषी यह कहे कि वे अपनी बेटी या बहन के हाथ पीले करनेवाले हैं तो इसका सही मतलब यह है कि वे उनकी शादी करवाने वाले हैं। कन्यादान के समय हल्दी हाथ पर लगाई जाने के कारण ऐसा कहना शुरू हुआ होगा।
- गोद = Lap.** इस एक शब्द से अनेकों प्रयोग हिंदी में हैं जो एक-दूसरे के इतने निकट नहीं हैं।
 - गोद लेना = To adopt a child**
 - गोद में लेना = To take someone or something to one's lap**
 - गोद भरना = To get pregnant**
- आंखें = Eyes. चार होना = To become four.** यानी दो व्यक्तियों को मिलना, दोनों की एक-एक जोड़ी आंखें मिलकर चार हो जाती है। किंतु इस प्रयोग का वास्तविक अर्थ प्यार होता है, किशोर कुमार जी के गाने ‘सुबह को जब हम नींद से जागे, आंख उन्हीं से चार हुई’ में भी यही मतलब है।

राजभाषा मंजरी

संकलन: हिंदी अनुभाग

प्रशासनिक शब्दावली (भिन्न-भिन्न संदर्भों में भिन्न-भिन्न अर्थ)

Act	-	अधिनियम, कृत्य
Article	-	अनुच्छेद, लेख
Distinguished	-	प्रतिष्ठित, विशिष्ट
Function	-	प्रकार्य, समारोह
Faculty	-	संकाय, शक्ति
Post	-	पद, डाक
Reference	-	संदर्भ, अभिनिर्देश
Right	-	अधिकार, सही
Section	-	अनुभाग, धारा
State	-	अवस्था, राज्य
Security	-	प्रतिभूति, सुरक्षा
Slip	-	पर्ची, चूक
Sign	-	हस्ताक्षर करना, संकेत
Test	-	जांच, परीक्षण
Undertaking	-	वचनबंध, उपक्रम
Undue	-	अनावश्यक, असम्यक

श्रुतिसम शब्दों के अर्थ-भेद

नीचे दिए गए शब्दों में से ज्यादातर सुनने में समान प्रतीत होते हैं किंतु उनके अर्थ में काफी अंतर है। कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं:-

उपलब्धि	Achievement
परिलब्धि	Emolument
लेख	Article
विलेख	Deed
संवाद	Dialogue, Communication
परिसंवाद	Symposium
संपत्ति	Property
परिसंपत्ति	Assets
हस्तचालित	Hand operated
हस्तलिखित	Hand written
प्रक्रिया	Process, Procedure
प्रकार्य	Function
पुनर्नियोजन	Re-employment
पुनर्नियुक्ति	Re-appointment
न्यायमूर्ति	Justice
न्यायवादी	Attorney
नौचालन	Navigation
नौपरिवहन	Shipping
आवेदन	Application
प्रतिवेदन	Report
अभ्यावेदन	Representation
वरिष्ठता	Seniority
वरीयता	Preference
प्राथमिकता	Priority
विशेषाधिकार	Privilege
परमाधिकार	Prerogative
एकाधिकार	Monopoly
संवीक्षा	Scrutiny
परिवीक्षा	Probation
समीक्षा	Review
सर्वेक्षण	Survey
पर्यवेक्षण	Supervision
प्रेक्षण	Observation

नेमी टिप्पणियां

राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2021-22 के अनुसार फाइलों पर हिंदी में टिप्पण का लक्ष्य कुल टिप्पणियों का 30% तय किया गया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु कुछ नेमी टिप्पणियां यहां प्रस्तुत हैं। इनका प्रयोग कर्मचारियों द्वारा अपने दैनंदिन कार्यालयीन कार्यों में किया जा सकता है।

क्रम सं	अंग्रेजी	हिंदी
1	Sanctioned as proposed.	यथा प्रस्तावित मंजूरी दी जाती है।
2	Follow up action may be taken.	अनुवर्ती कार्रवाई की जाए।
3	Draft reply is put up for approval	उत्तर का प्रारूप अनुमोदनार्थ प्रस्तुत है।
4	Please get financial clearance.	कृपया वित्तीय अनुमोदन/सहमति प्राप्त करें।
5	Necessary corrections may be incorporated in purchase order	क्रय आदेश में आवश्यक सुधार किया जाए।
6	May please be approved	कृपया अनुमोदित किया जाए।
7	Please look into the matter	कृपया इस मामले को देखें।
8	Explanation may be called for.	स्पष्टीकरण मांगा जाए।
9	Checked, Verified and found correct	जांच की गई, सत्यापित किया एवं सही पाया।
10	Immediate disposal of the case is requested.	मामले का निपटान शीघ्र करने का अनुरोध है।
11	Copy is enclosed for ready reference	सुलभ संदर्भ के लिए प्रतिलिपि संलग्न है।
12	Early action please	शीघ्र कार्रवाई करें।
13	Give top priority to this work	इस कार्य को परम प्राथमिकता दें।
14	Payment under this order is to be made only to the Pensioner in person.	इस आदेश के अनुसार भुगतान पेंशनभोगी को केवल व्यक्तिगत रूप से किया जाना है।
15	Inconvenience caused is regretted.	असुविधा के लिए खेद है।
16	Please inform all concerned.	सभी संबंधितों को सूचित कर दें।
17	Please send nominations.	कृपया नामांकन भेजें।
18	The proposal is in order.	प्रस्ताव नियमानुकूल है।
19	Sanctioned as a special case.	विशेष मामले के रूप में मंजूरी दी जाती है।
20	Relevant papers may be put up.	संबंधित कागज़पत्र प्रस्तुत करें।
21	Resubmit with necessary papers.	आवश्यक कागज़ात के साथ पुनः प्रस्तुत करें।
22	Report compliance immediately.	अनुपालन की रिपोर्ट तत्काल दें।
23	May be informed accordingly.	तदनुसार सूचित किया जाए।
24	Make it convenient to attend the meeting.	बैठक में भाग लेने का कष्ट करें।

पत्राचार के नमूने

विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र / VIKRAM SARABHAI SPACE CENTRE
तिरुवनंतपुरम / THIRUVANANTHAPURAM- 695022

सं. वीएसएससी/10/20.....

No. VSSC/10/20.....

..... अक्टूबर / October, 20.....

बैठक हेतु आमंत्रण / Call for Meeting

15 वीं ग्रुप समीक्षा बैठक दिनांक (तिथि) को (समय) बजे (स्थान) सम्मेलन कक्ष में निर्धारित है। सभी सदस्यों से अनुरोध है कि कृपया बैठक में भाग लें। बैठक की कार्यसूची निम्नानुसार है:

15th Group Review Meeting is scheduled on (date) at (time) hrs at (venue) Conference Hall. All the members are requested to attend the meeting. Agenda of the meeting is as mentioned below:

1. अध्यक्ष द्वारा प्रारंभिक टिप्पणी / Introductory Remarks by Chairman
2. पिछली बैठक की कार्रवाई बिंदुओं की समीक्षा / Review of action point of previous meeting
3. नई कार्यसूची बिंदुओं पर चर्चा / Discussion on new points
4. अध्यक्ष की अनुमति से अन्य कोई मद / Any other point with the permission of the Chair.

सेवा में / To

- हस्ताक्षरित / sd

समिति के सभी सदस्य / All Members of the Committee

प्रधान, (प्रभाग) / Head, (Division)

पु. प्र. / CC

उप निदेशक, / DD,

विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र / VIKRAM SARABHAI SPACE CENTRE
तिरुवनंतपुरम / THIRUVANANTHAPURAM- 695022

सं. वीएसएससी/10/20.....

No. VSSC/10/20.....

..... अक्टूबर / October, 20.....

विषय : के बीच सरकारी कार्य-व्यवहार - तिमाही रिपोर्ट से संबंधित

Sub : Official dealings between - Quarterly Report-reg.

यह सूचित किया जाता है कि उपर्युक्त विषय के संबंध में (महीना व वर्ष) को समाप्त तिमाही के लिए इस अनुभाग की रिपोर्ट कृपया "शून्य" समझी जाए।

It is informed that the report on the above subject pertaining to this section for the quarter ending (Month & year) may please be treated as "NIL".

सेवा में / To

भवदीय/भवदीया/Yours faithfully,

प्रशासन अधिकारी / Administrative Officer

सामान्य प्रशासन / General Administration

-हस्ताक्षरित/sd

गगन

विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र / VIKRAM SARABHAI SPACE CENTRE
तिरुवनंतपुरम / THIRUVANANTHAPURAM- 695022

सं. वीएसएससी/10/20.....

No. VSSC/10/20.....

..... अक्टूबर / October, 20.....

समयोपरि सूचना/OVERTIME INTIMATION

..... (स्थान).....क्षेत्र के(प्रभाग का नाम).....के निम्नलिखित कर्मचारी दिनांक को (कार्य की प्रकृति)..... के लिए कार्यालय समय के बाद कार्य करेंगे।

The following staff of (Name of Division) of (Location) area will be working after office hours on (date), for (Nature of Work)

कार्य के लिए नियोजित कर्मिकों के विवरण/DETAILS OF PERSONNEL DEPLOYED FOR WORK

क्रं सं. Sl.No.	नाम / NAME (श्री / Shri.)	पदनाम/ DESIGNATION	स्टाफ कोड/STAFF CODE	तिथि/ DATE
1.				

-हस्ताक्षरित/sd

सेवा में / To

के.ओ.सुब प्रभारी, क्षेत्र / CSIF-in-charge, Area

प्र.प्रे / Copy to

ड्यूटी अधिकारी, वीएसएससी / Duty Officer, VSSC

ग्रुप निदेशक, / GD,

उप निदेशक, / DD,

विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र / VIKRAM SARABHAI SPACE CENTRE
तिरुवनंतपुरम / THIRUVANANTHAPURAM- 695022

प्रेषक / From

श्री / श्रीमती / Shri / Smt.

पदनाम / Designation

अनुभाग / Section

सं. वीएसएससी/10/20.....

No. VSSC/10/20.....

सेवा में/To

श्री/श्रीमती/Shri/Smt.

पदनाम/Designation

अनुभाग/Section

..... अक्टूबर / October, 20.....

महोदय/महोदया / Sir/Madam,

विषय / Sub : हिंदी अनुवाद/Hindi Translation

कृपया आपके द्वारा अपेक्षित प्रमाणपत्र का हिंदी अनुवाद आगे की आवश्यक कार्रवाई हेतु इसके साथ संलग्न है।

Please find enclosed the requisite Hindi version ofcertificate for further necessary action.

भवदीय/भवदीया/Yours faithfully,

-हस्ताक्षरित/sd

संलग्नक/ Encl: यथोपरि/ As above

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आनेवाले प्रावधान

केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रावधान इस धारा के अंतर्गत किया गया है। कार्यालयों में महत्वपूर्ण दस्तावेजों का द्विभाषीकरण इसी प्रावधान के अंतर्गत किया जाता है। इस धारा 3(3) के अंतर्गत 14 ऐसे दस्तावेज निर्धारित किए गए हैं जिन्हें जारी करते समय इसे अंग्रेजी और हिंदी दोनों में एक साथ जारी किया जाता है। यह नियम 'क' 'ख' अथवा 'ग' सभी क्षेत्रों में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों में समान रूप से लागू है। इसके लिए निर्धारित लक्ष्य 100% है, यानी कि इस प्रावधान के अंतर्गत आनेवाला एक भी दस्तावेज समतुल्य हिंदी रूपांतर के बिना जारी नहीं किया जा सकता। साथ ही इस प्रावधान के सख्त अनुपालन की ज़िम्मेदारी इन दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करनेवाले अधिकारी को दी गई है। हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी का यह कर्तव्य होता है कि वे यह सुनिश्चित करें कि इस नियम का उल्लंघन नहीं किया गया है अन्यथा इसके लिए उन्हें ज़िम्मेदार माना जाएगा।

1	संकल्प	Resolutions
2	सामान्य आदेश (परिपत्र, सभी प्रकार के आदेश, कार्यालय ज्ञापन, समझौता ज्ञापन आदि)	General Orders (Circulars, all kind of Orders, OMs, MoUs etc.)
3	नियम	Rules
4	अधिसूचनाएँ	Notifications
5	प्रशासनिक रिपोर्ट	Administrative Reports
6	अन्य प्रतिवेदन/रिपोर्ट	Other Reports
7	संसद, सदन के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट और राजकीय कागज़-पत्र (संसदीय कागज़ात)	Administrative and other reports and official papers laid before a House or the Houses of Parliament (Parliamentary Papers)
8	प्रेस विज्ञप्तियाँ	Press Communiques
9	करार	Agreements
10	लाइसेंस/अनुज्ञप्ति	Licenses
11	परमिट/अनुज्ञा पत्र	Permits
12	संविदा (टेका)	Contracts
13	निविदा प्रारूप	Tender Forms
14	सूचनाएँ	Notices

कुछ वैज्ञानिक प्रक्रियाएं एवं उससे संबंधित उपकरण

क्रम सं. / Sl. No.	प्रक्रिया / Process	उपकरण / Equipment
1.	अवशोषण (Absorption)	अवशोषणमापी (Absorptiometer)
2.	त्वरण (Acceleration)	त्वरणमापी (Accelerometer)
3.	कैल्सीयन (Calcification)	कैल्सीमापी (Calciometer)
4.	कार्बनन (Carbonization)	कार्बनमापी (Carbonometer)
5.	विवर्तन (Diffraction)	विवर्तनमापी (Diffractionmeter)
6.	उद्वाष्पन (Evaporation)	उद्वाष्पनमापी (Evaporimeter)
7.	प्रसारण (Expansion)	प्रसारमापी (Expansionmeter)
8.	दंतुरण (Indentation)	दंतुरमापी (Indentometer)
9.	प्रेरण (Induction)	प्रेरकत्वमापी (Inductometer)
10.	अंतःस्यंदन (Infiltration)	अंतःस्यंदनमापी (Infiltrationmeter)
11.	आयनन (Ionization)	आयनमापी (Ionometer)
12.	दोलन (Oscillation)	दोलनमापी (Oscillometer)
13.	प्रस्फुरण (Scintillation)	प्रस्फुरणमापी (Scintillometer)
14.	तुल्यकालन (Synchronization)	तुल्यकालमापी (Synchronometer)
15.	कंपन (Vibration)	कंपनमापी (Vibrometer)

चुटकुले

वकील : तलाक करवाने के 50,000 रुपये लगेंगे।

मुक्किल : पागल हो क्या...? पंडित जी ने 1,100/- रुपये में शादी करवाई थी..!

वकील : देख लिया न सस्ते काम का नतीजा..!



माँ : तुम्हें कैसी बीवी चाहिए..??

बेटा : बिलकुल तुम्हारे जैसी... लाड़ और प्यार करनेवाली...

माँ : क्या बात है बेटा..! पूरी जिंदगी चप्पल खाकर ही काटनी है क्या...



शादी के बाद पहली बार बहू रसोई में गई और रेसिपी बुक पढ़कर खाना बना रही थी।

सास बाहर से लौटी, फ्रिज खोला, देखकर चौंक गई और

पूछा : ये मंदिर का घंटा फ्रिज में क्यों रखा है?

बहू : बुक में लिखा है, सभी चीज़ों का मिश्रण बना लें और एक 'घंटा' फ्रिज में रखें।



मुर्गियों के फार्म में एक बार जांच के लिए इंस्पेक्टर आए।

इंस्पेक्टर : तुम मुर्गियों को क्या खिलाते हो?

पहला मालिक : 'बाजरा'...

इंस्पेक्टर : बासी (खराब) खाना, इसे गिरफ्तार कर लो...

दूसरा मालिक : 'चावल'...

इंस्पेक्टर : गलत खाना, इसे भी गिरफ्तार कर लो... अब संता की बारी आई... हम तो जी, मुर्गियों को ही 5-5 रुपए दे देते हैं... जो तुम्हारी मर्जी है जाकर खा लो...।



पापा : बेटा... आज तेरी मम्मी इतनी चुपचाप क्यों बैठी है?

बेटा : उन्होंने मुझसे लिपस्टिक मांगी थी, गलती से मैंने फेवीस्टिक दे दी...

पापा (आंख में आंसू के साथ)

: जुग-जुग जिओ मेरे लाल... ऐसा बेटा भगवान सभी को दे...

सौजन्य: व्हाट्सैप

इंजीनियरिंग का एक छात्र : सर, हमने कॉलेज में एक ऐसी चीज़ बनाई है..., जिसकी सहायता से आप दीवार के आर-पार देख सकते हैं...

सर (खुश होते हुए) : वाह! क्या बात है... वह क्या चीज़ है..?

छात्र : छेद...

सर : ले थप्पड़...!



पत्नी : सुनते हो जी...!

मुझे Happiness की spelling बताओ!

पति : हाँ... तो लिखो..... UNMARRIED.



आपकी प्रतिक्रिया हमारी प्रेरणा

हमें आपकी गृह-पत्रिका “गगन” के 52वें अंक की प्राप्ति हुई है। इसके प्रकाशन पर आप सभी को आंतरिक बधाई। इसकी मुखपृष्ठ सज्जा बहुत ही सादा पर एक सशक्त संदेश देता है एवं संगठन के ऊर्ध्वमुखी विकास को दर्शाता है। इसमें छपे लेख विज्ञान, तकनीक और हिंदी के दृष्टांत से परिचय कराते हैं।

आपने पत्रिका में लगभग सभी विषयों को शामिल किया है जिससे पत्रिका श्रेणी के पाठकों में लोकप्रिय बन सकी है। इसरो के पीएसएलवी प्रक्षेपण यान के अविरत विजयगाथा में अंकित तथ्यों को बहुत ही रोचक रूप से दर्शाया गया है।

भारत की महिला शिक्षिका लेख हमारे देश के महिलाओं के महिमा का बखान करती है, वह भी उस समय जब स्वतंत्रता के लिए हमारा देश शत्रुओं के लोहा ले रहा था। **अफसर का रिश्ता** कविता आधुनिक भारत के जागरूक युवा मन से परिचय कराती है, **बिना विश्वकप के, अनाथ बालक की चाह, शुक्र ग्रह** आदि लेख/कविता बहुत ही सूचनाप्रद और वास्तविक एवं मर्मस्पर्शी हैं। **हिंदी का संकट** लेख वैश्विक परिप्रेक्ष्य में प्रत्येक भाषा के महत्व को दर्शाता है। राजभाषा संबंधी लेखों एवं अन्य चित्र झलकियों के माध्यम से पाठक संस्था की विभिन्न गतिविधियों के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन के सुचारु व्यवस्था से अवगत होते हैं।

इस प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं एवं आशा है हमें यह पत्रिका प्राप्त होती रहेगी तथा हम आपके कार्यालय की गतिविधियों से अवगत होते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित

रुमकी दत्ता, सहायक निदेशक (रा. भा.)



आपके कार्यालय से ईमेल द्वारा प्रेषित हिंदी गृह-पत्रिका ‘गगन’ के 52वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है, एतदर्थ धन्यवाद।

सर्वप्रथम वीएसएससी को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट राजभाषा कार्य निष्पादन हेतु तृतीय पुरस्कार एवं गृह पत्रिका की श्रेणी में ‘गगन’ को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करने के लिए बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ बहुत सुन्दर है। आपके कार्यालय में हो रहे हिंदी कार्यान्वयन और अन्य समाचारों की पत्रिका में सुंदर प्रस्तुति की गई है। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पृष्ठ सं. 19 पर प्रकाशित श्री कृष्ण मुरारी की कविता ‘एम.एस. धोनी’ काफी अच्छी लगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई।

धन्यवाद,

नीलू सेठ, उप निदेशक (राजभाषा)



आपकी प्रतिक्रिया हमारी प्रेरणा

आपके कार्यालय द्वारा ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित “गगन” पत्रिका का नवीनतम 52वां अंक प्राप्त हुआ।

इस पत्रिका का मुख पृष्ठ मनोहारी है तथा आंतरिक पृष्ठों में गगन के इंद्रधनुषी रंगों में साहित्य, सामाजिक, वैज्ञानिक, राजभाषा गतिविधियों की छटाओं के दर्शन होते हैं। विशेष रूप से पृष्ठ क्रमांक 11 पर ‘कंबल’ लेख बहुत ही मार्मिक एवं वास्तविक लगा। ‘राजभाषा मंजरी’ में संकलित सभी लेख ज्ञानवर्धक लगे।

इस पत्रिका को साकार रूप देने वाले सभी कार्मिकों का अभिनंदन। आशा है कि “गगन” के आगामी अंक भी पाठकों का ज्ञानार्जन करने में सहायक सिद्ध होंगे।

धन्यवाद।

सरला, संयुक्त निदेशक (रा. भा.) (सेवानिवृत्त)

ई-पत्रिका के रूप में प्रेषित “गगन” का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ। आकर्षक मुख्य पृष्ठ से लेकर प्रत्येक पृष्ठों को बहुत सुंदर ढंग से समाकलित किया गया है। इस पत्रिका में साहित्य के लगभग सभी विधाओं (निबंध, कविता, कहानी, यात्रावृत्तांत, चुटकुले आदि) को जगह दी गई है। इस पिटारे में **सकारात्मक ज्योति, अनाथ बालक की चाह, कंबल** मर्मस्पर्शी हैं तो **स्वभक्षी रॉकेट, अज्ञेय का काव्य विश्लेषण, शुक्र ग्रह** ज्ञानप्रद विषय हैं, विश्व कप, सुशांत, धोनी तत्कालीन सामयिकी से संबंधित हैं। **ट्रिस्टन डा कुन्हा** की यात्रा मनमोहक रही। विविध रचनाओं के साथ-साथ वीएसएससी में हिंदी कार्यान्वयन से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों को भी दर्शाया है। हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन में यह एक उत्तम प्रयास है। “गगन” के प्रकाशन के लिए हिंदी अनुभाग और संपादकीय समिति को शुभकामनाएं।

सीना राजेन्द्रन, उप निदेशक (रा. भा.)



आपके दिनांक 06 अक्टूबर, 2021 के मेल के साथ आपकी गृह-पत्रिका “गगन” का 52वाँ ई-अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

सबसे पहले मैं, आपकी इस पत्रिका को ‘राजभाषा कीर्ति पुरस्कार’ प्राप्त होने की बधाई देती हूँ। आपकी पत्रिका ‘गगन’ निस्संदेह उत्कृष्ट पत्रिकाओं की श्रेणी में आती है। इसमें हर प्रकार के विषयों से संबंधित लेख समाहित करना आप नहीं भूलते। सामान्य विषय, वैज्ञानिक व तकनीकी लेख, सामाजिक सरोकार के लेख, खेल, पर्यावरण और चूंकि राजभाषा हिंदी की गृह-पत्रिका है, तो राजभाषा पर और उससे संबंधित गतिविधियों पर लेखों को शामिल करना भी लाज़िमी है, जिन सभी को ‘गगन’ में स्थान प्राप्त है।

इस बार के अंक में भी हर बार की भाँति बढ़िया सामग्री मिली। कुछ कृतियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं जैसे, ‘कंबल’, ‘अज्ञेय के काव्य में..’, ‘बिना विश्व कप के...’, ‘आश्चर्यजनक किंतु सत्य’ और अत्यंत रोचक लेख ‘ट्रिस्टन डा कुन्हा’ लगा जो मेरी प्रकृति के अनुरूप है, काश! मैं भी कभी इस टापु का भ्रमण कर पाऊँ। साथी ही, यहाँ एक विशेष बात का उल्लेख करना चाहती हूँ, वह यह कि पत्रिका में परिवारजनों के योगदान की बड़ी हिस्सेदारी देखने को मिली। यह एक तो आपके इस प्रयास का परिचायक है कि विभाग की हिंदी सलाहकार समिति की सिफारिश, कि ‘हिंदी को घर-घर तक पहुँचाया जाए,’ को आपका केंद्र बखूबी निभा रहा है और दूसरा, यह कि परिवारजनों में हिंदी के प्रति आस्था और हिंदी में अभिव्यक्ति-कौशल भी अत्यंत श्लाघनीय है।

कुल मिलाकर पत्रिका बहुत ही रोचक है, जिसका हर बार इंतज़ार रहता है। ‘गगन’ के भावी अंकों के लिए संपादक मंडल को शुभकामनाओं के साथ,

डीनू रानी जी, उप निदेशक (राजभाषा)

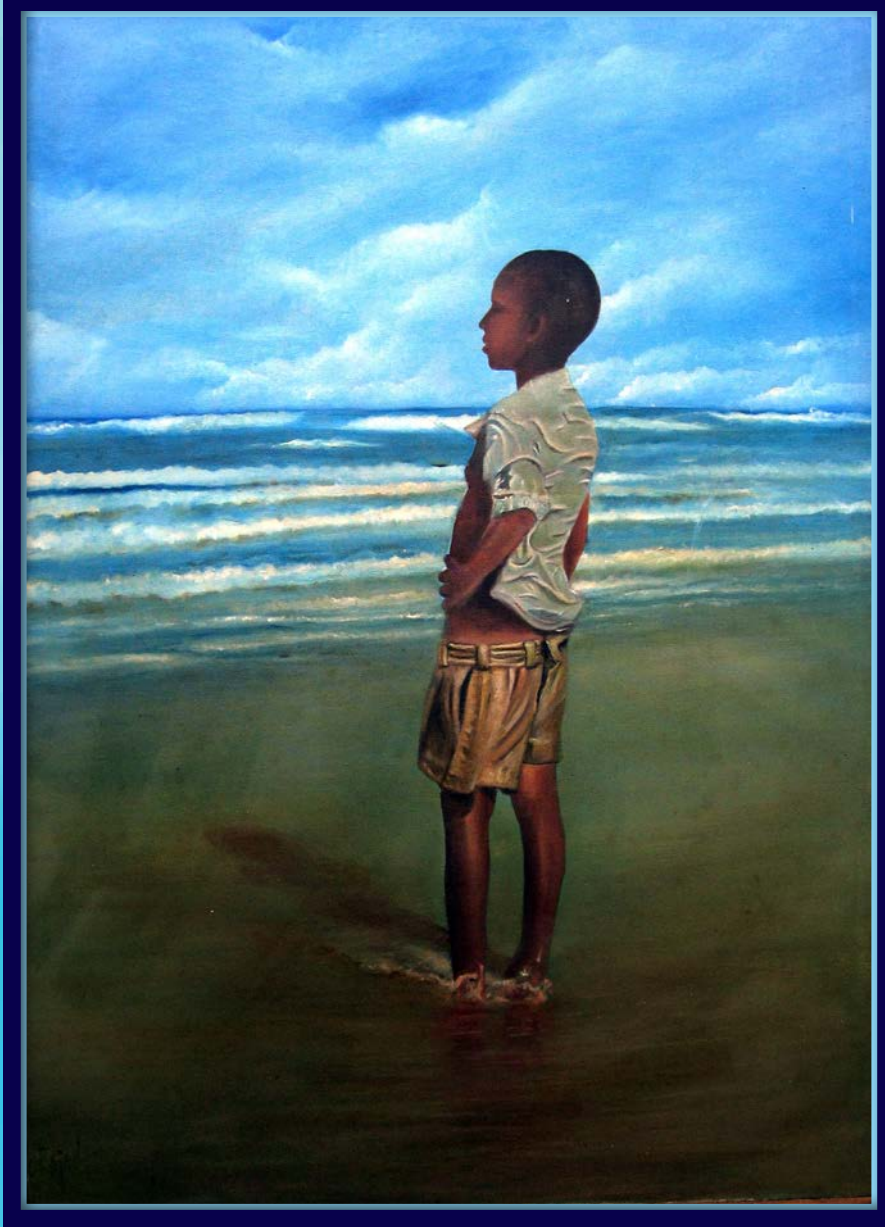
राजभाषा विभाग द्वारा प्रदत्त कीर्ति पुरस्कार



'ग' क्षेत्र में उत्कृष्ट हिंदी पत्रिका के लिए द्वितीय पुरस्कार 'गगन' को प्राप्त हुआ है।
राजभाषा विभाग द्वारा 14 सितंबर, 2021 को विज्ञान भवन,
नई दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस समारोह 2021 में निदेशक, वीएसएससी ने यह पुरस्कार
माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री निशीथ प्रामाणिक से ग्रहण किया।



लहरों से संवाद



तैल चित्र (ऑयल पेंटिंग)
(चित्रकार: श्री टी सी राजन, वरि. परि. सहायक, केंद्रीय लेखा)



हिंदी अनुभाग, वीएसएससी द्वारा प्रकाशित;
मेसर्स ऑरेंज प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड, तिरुवनंतपुरम-1 द्वारा मुद्रित (0471 4010905)